Edition : August 2023/011 Price : Free

मातृका MAATRIKA

A CORE SHARADA TEAM FOUNDATION INITIATIVE

REINCARNATION OF THE SHARADA SCRIPT

Download Our Free "Satisar" Andriod app

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥

प्रयत्न: साधक

It is zealous, spontaneous effort on the part of the aspirant that brings about the communion of his mind with the deity inherent in the mantra.
Summary and Exposition/Note From: Śiva Śūtra by Jai Deva Singh

LEARN SHARADA
TEACH SHARADA

संस्कृति और सभ्यता को जानने की एक पहल

PRESERVE - PROTECT - PROPAGATE

Chief Editor:- Kuldip Dhar
Catalog Designer :- Sunil Mahnoori
Supporting Editors :- Veronica Peer
Parul Bradoo & Others

संपादकीय / Editorial

Kuldip Dhar

𑇁 𑆤𑆩𑆳𑆩𑆴 𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆢𑆼𑆮𑆵𑆁, 𑆩𑆲𑆳𑆨𑆳𑆓𑆵𑆁 𑆨𑆓𑆮𑆠𑆵𑆁 𑆑𑆳𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫 𑆥𑆶𑆫𑆮𑆳𑆱𑆴𑆤𑆵𑆁
𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆢𑆳𑆪𑆴𑆤𑆵𑆩𑆳𑆩𑇀𑇅 𑆫𑆑𑇀𑆰 𑆩𑆳𑆩𑇀 𑆫𑆑𑇀𑆰 𑆩𑆳𑆩𑇀 𑆠𑇀𑆮𑆩𑇀

आध्यात्मिक कश्मीर में जन्मे आचार्य अभिनवगुप्त ने हमें कश्मीरी शैववाद दिया। कश्मीर के इस बेटे ने हमें शैववाद का एक विशेष दृष्टिकोण दिया जिस को भारत के सभी तत्वज्ञानियों ने सराहा। हमारी यह इच्छा है कि पाठक इस महान आध्यात्मिक नेता के बारे में हमें कुछ लिखें जिसे हम आगामी संस्करणों में प्रकाशित करेंगे।

मुझे आशा है, आप लल् द्यद के बारे में अब तक के प्रकाशित लेखों का आनंद ले रहे हैं। माता लालेश्वरी के मूल वाख प्राप्त करना एक चुनौती है, क्योंकि उन्होंने कुछ भी नहीं लिखा। हमारे पास जो कुछ भी है, वह बहुत बाद में लिखा गया है और इसमें अशुद्धियाँ या गलतियाँ होने की संभावनायें है। यहां तक कि एक ही वाख के कुछ अलग-अलग स्रोतों में शाब्दिक रूप से और उनके बताए गए अर्थ में अंतर है। हमें शारदा में लिखे कुछ वाख प्राप्त करने में सफलता मिली है।। उन्होंने ईश्वर के प्रति अपने प्रेम और पुनर्जन्म से पूर्ण मुक्ति प्राप्त करने की चुनौतियों के बारे में गाया।

ज़ेठ आठम, अभिनवगुप्त की जयंती व श्रृंगेरी के श्री श्री विदुशेखर भारती शंकराचार्यजी की कश्मीर के टीटवाल में नवनिर्मित शारदा माता मंदिर की यात्रा पिछले दो महीनों के मुख्य आकर्षण रहे।

हमने मातृका के जून संस्करण से कश्मीर के मंदिरों के बारे में प्रकाशित करना शुरू कर दिया है और आशा है आप के ज्ञाण में वृधी हो रही है।

प्रिय पाठको, शारदा लिपि, कश्मीरी साहित्यिक विरासत और भारतीय साहित्य ऐवं विचारकों पर इसके प्रभाव को लोकप्रिय बनाने में हमारे विनम्र प्रयासों की सफलता काफी हद तक आप पर निर्भर है और आप इसके बारे में क्या कहते हैं। कृपया अपने विचार साझा करें।

𑆄𑆣𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆴𑆑 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫 𑆩𑆼𑆁 𑆘𑆤𑇀𑆩𑆼 𑆄𑆖𑆳𑆫𑇀𑆪 𑆃𑆨𑆴𑆤𑆮𑆓𑆶𑆥𑇀𑆠 𑆤𑆼 𑆲𑆩𑆼𑆁 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆯𑆽𑆮𑆮𑆳𑆢 𑆢𑆴𑆪𑆳𑇅 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫 𑆑𑆼 𑆅𑆱 𑆧𑆼𑆛𑆼 𑆤𑆼 𑆲𑆩𑆼𑆁 𑆯𑆽𑆮𑆮𑆳𑆢 𑆑𑆳 𑆍𑆑 𑆮𑆴𑆯𑆼𑆰 𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑆴𑆑𑆾𑆟 𑆢𑆴𑆪𑆳 𑆘𑆴𑆱 𑆑𑆾 𑆨𑆳𑆫𑆠 𑆑𑆼 𑆱𑆨𑆵 𑆠𑆠𑇀𑆮𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆤𑆼 𑆱𑆫𑆳𑆲𑆳𑇅 𑆲𑆩𑆳𑆫𑆵 𑆪𑆲 𑆅𑆖𑇀𑆗𑆳 𑆲𑆽 𑆑𑆴 𑆥𑆳𑆜𑆑 𑆅𑆱 𑆩𑆲𑆳𑆤 𑆄𑆣𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆴𑆑 𑆤𑆼𑆠𑆳 𑆑𑆼 𑆧𑆳𑆫𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆩𑆼𑆁 𑆑𑆶𑆗 𑆭𑆴𑆒𑆼𑆁 𑆘𑆴𑆱𑆼 𑆲𑆩 𑆄𑆓𑆳𑆩𑆵 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆫𑆟𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆴𑆠 𑆑𑆫𑆼𑆁𑆓𑆼𑇅

𑆩𑆶𑆙𑆼 𑆄𑆯𑆳 𑆲𑆽, 𑆄𑆥 𑆭𑆭𑆶 𑆢𑇀𑆪𑆢 𑆑𑆼 𑆧𑆳𑆫𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆃𑆧 𑆠𑆑 𑆑𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆴𑆠 𑆭𑆼𑆒𑆾𑆁 𑆑𑆳 𑆄𑆤𑆁𑆢 𑆭𑆼 𑆫𑆲𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆩𑆳𑆠𑆳 𑆭𑆳𑆭𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫𑆵 𑆑𑆼 𑆩𑆷𑆭 𑆮𑆳𑆒 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆳 𑆍𑆑 𑆖𑆶𑆤𑆿𑆠𑆵 𑆲𑆽, 𑆑𑇀𑆪𑆾𑆁𑆑𑆴 𑆇𑆤𑇀𑆲𑆾𑆁𑆤𑆼 𑆑𑆶𑆗 𑆨𑆵 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆭𑆴𑆒𑆳𑇅 𑆲𑆩𑆳𑆫𑆼 𑆥𑆳𑆱 𑆘𑆾 𑆑𑆶𑆗 𑆨𑆵 𑆲𑆽, 𑆮𑆲 𑆧𑆲𑆶𑆠 𑆧𑆳𑆢 𑆩𑆼𑆁 𑆭𑆴𑆒𑆳 𑆓𑆪𑆳 𑆲𑆽 𑆃𑆿𑆫 𑆅𑆱𑆩𑆼𑆁 𑆃𑆯𑆶𑆢𑇀𑆣𑆴𑆪𑆳𑆀 𑆪𑆳 𑆓𑆭𑆠𑆴𑆪𑆳𑆀 𑆲𑆾𑆤𑆼 𑆑𑆵 𑆱𑆁𑆨𑆳𑆮𑆤𑆳𑆪𑆼𑆁 𑆲𑆽𑇅 𑆪𑆲𑆳𑆁 𑆠𑆑 𑆑𑆴 𑆍𑆑 𑆲𑆵 𑆮𑆳𑆒 𑆑𑆼 𑆑𑆶𑆗 𑆃𑆭𑆓-𑆃𑆭𑆓 𑆱𑇀𑆫𑆾𑆠𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆯𑆳𑆧𑇀𑆢𑆴𑆑 𑆫𑆷𑆥 𑆱𑆼 𑆃𑆿𑆫 𑆇𑆤𑆑𑆼 𑆧𑆠𑆳𑆍 𑆓𑆍 𑆃𑆫𑇀𑆡 𑆩𑆼𑆁 𑆃𑆁𑆠𑆫 𑆲𑆽𑇅 𑆲𑆩𑆼𑆁 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆭𑆴𑆒𑆼 𑆑𑆶𑆗 𑆮𑆳𑆒 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆱𑆦𑆭𑆠𑆳 𑆩𑆴𑆭𑆵 𑆲𑆽𑇅𑇅 𑆇𑆤𑇀𑆲𑆾𑆁𑆤𑆼 𑆆𑆯𑇀𑆮𑆫 𑆑𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆼𑆩 𑆃𑆿𑆫 𑆥𑆶𑆤𑆫𑇀𑆘𑆤𑇀𑆩 𑆱𑆼 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟 𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆼 𑆑𑆵 𑆖𑆶𑆤𑆿𑆠𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆧𑆳𑆫𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆓𑆳𑆪𑆳𑇅

𑆘𑆼𑆜 𑆄𑆜𑆩, 𑆃𑆨𑆴𑆤𑆮𑆓𑆶𑆥𑇀𑆠 𑆑𑆵 𑆘𑆪𑆁𑆠𑆵 𑆮 𑆯𑇀𑆫𑆸𑆁𑆓𑆼𑆫𑆵 𑆑𑆼 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆮𑆴𑆢𑆶𑆯𑆼𑆒𑆫 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵 𑆯𑆁𑆑𑆫𑆳𑆖𑆳𑆫𑇀𑆪𑆘𑆵 𑆑𑆵 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫 𑆑𑆼 𑆛𑆵𑆛𑆮𑆳𑆭 𑆩𑆼𑆁 𑆤𑆮𑆤𑆴𑆫𑇀𑆩𑆴𑆠 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆩𑆳𑆠𑆳 𑆩𑆁𑆢𑆴𑆫 𑆑𑆵 𑆪𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳 𑆥𑆴𑆗𑆭𑆼 𑆢𑆾 𑆩𑆲𑆵𑆤𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆩𑆶𑆒𑇀𑆪 𑆄𑆑𑆫𑇀𑆰𑆟 𑆫𑆲𑆼𑇅

𑆲𑆩𑆤𑆼 𑆩𑆳𑆠𑆸𑆑𑆳 𑆑𑆼 𑆘𑆷𑆤 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆫𑆟 𑆱𑆼 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫 𑆑𑆼 𑆩𑆁𑆢𑆴𑆫𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆧𑆳𑆫𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆴𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆳 𑆯𑆶𑆫𑆷 𑆑𑆫 𑆢𑆴𑆪𑆳 𑆲𑆽 𑆃𑆿𑆫 𑆄𑆯𑆳 𑆲𑆽 𑆄𑆥 𑆑𑆼 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆟 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑆸𑆣𑆵 𑆲𑆾 𑆫𑆲𑆵 𑆲𑆽𑇅

𑆥𑇀𑆫𑆴𑆪 𑆥𑆳𑆜𑆑𑆾, 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆭𑆴𑆥𑆴, 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆱𑆳𑆲𑆴𑆠𑇀𑆪𑆴𑆑 𑆮𑆴𑆫𑆳𑆱𑆠 𑆃𑆿𑆫 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵𑆪 𑆱𑆳𑆲𑆴𑆠𑇀𑆪 𑆎𑆮𑆁 𑆮𑆴𑆖𑆳𑆫𑆑𑆾𑆁 𑆥𑆫 𑆅𑆱𑆑𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆨𑆳𑆮 𑆑𑆾 𑆭𑆾𑆑𑆥𑇀𑆫𑆴𑆪 𑆧𑆤𑆳𑆤𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆩𑆳𑆫𑆼 𑆮𑆴𑆤𑆩𑇀𑆫 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆳𑆱𑆾𑆁 𑆑𑆵 𑆱𑆦𑆭𑆠𑆳 𑆑𑆳𑆦𑆵 𑆲𑆢 𑆠𑆑 𑆄𑆥 𑆥𑆫 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆨𑆫 𑆲𑆽 𑆃𑆿𑆫 𑆄𑆥 𑆅𑆱𑆑𑆼 𑆧𑆳𑆫𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆑𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆲𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆑𑆸𑆥𑆪𑆳 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆮𑆴𑆖𑆳𑆫 𑆱𑆳𑆙𑆳 𑆑𑆫𑆼𑆁𑇅

𑆑𑆶𑆭𑆢𑆵𑆥 𑆣𑆫

Inside

Page 2 • Editorial

Page 3 • Content List & Gayatri Mantra art

Page 4 • Lalû Vàkh by A.K Razdan

Page 5 • Isha Upnishad by A.K.Razdan

Page 6 • Krishna Stuti Manuscript by CST

Page 8 • Krishna Stuti By CST

Page 10 • Kashmiri Poem - Yoginimata by Indu Pandita

Page 11 • Swami Ramji by Gaurav Vaidya

Page 12 • Quiz / प्रश्नोत्तरी

Page 13 • Koshur Primer - Snapshot

Page 14 • Poem by Kishni Pandita
• Shúri Bäth

Page 15 • Lagubattarsk by Ketu CS

Page 16 • Abhinavgupta - The Visionary and Tantra Scholar by Prasidha

Page 17 • Abhinavgupta by A.K. Razdan

Page 18 • Jwalaji by Sanjay PanditaTemples of Kashmir by Sanjay Kaul

Page 19 • Reading Kashmiri/Devanagri Vowels

Page 20 • Shankaracharaya ji's visit to Teetwal
• Kashmiri Poem by Prithavi Nath Bhakti

Page 21 • Konark Temple by by D.K.Sud

Page 22 • The curious case of Kashmir Shaivism by Jaidev

Page 25 • CST - The way Forward & Interview
• Sharada Lipi Development By Vinutha Saligram

Page 26 • Professor Ved Kumari Ghai by Vinutha Saligram

Page 28 • Sharada Varnmala

Page 29 • Student's contribution
• Social Media posts

Page 30 • Highlights of the month
• Our Publications
• Donation Request

𑆬𑆬𑆶 𑆮𑆳𑆒 / ललु वाख

A.K.Razdan

आमि पन्न(पनॖ) सोदरस नावि छस लमान
कति बोज़ुन(बोज़ि) दय म्योन म्यति(मे ति) दियि तार
आम्यन टाक्यन पोन्य ज़न शमान
ज़ुव छुम ब्रमान गर्(गरॖ) गछ़हा ॥३॥

𑆄𑆩𑆴 𑆥𑆤𑇀𑆤(𑆥𑆤𑆶) 𑆱𑆾𑆢𑆫𑆱 𑆤𑆳𑆮𑆴 𑆗𑆱 𑆬𑆩𑆳𑆤
𑆑𑆠𑆴 𑆧𑆾𑆘𑆶𑆤(𑆧𑆾𑆘𑆴) 𑆢𑆪 𑆩𑇀𑆪𑆾𑆤 𑆩𑇀𑆪𑆠𑆴(𑆩𑆼 𑆠𑆴) 𑆢𑆴𑆪𑆴 𑆠𑆳𑆫
𑆄𑆩𑇀𑆪𑆤 𑆛𑆳𑆑𑇀𑆪𑆤 𑆥𑆾𑆤𑇀𑆪 𑆘𑆤 𑆯𑆩𑆳𑆤
𑆘𑆶𑆮 𑆗𑆶𑆩 𑆧𑇀𑆫𑆩𑆳𑆤 𑆓𑆫𑇀(𑆓𑆫𑆶) 𑆓𑆗𑆲𑆳 𑇆𑇓𑇆

"Pulling my life boat with the untwisted thread, I am trying to cross this mortal worldly ocean. May it be, that He hears my prayers and ferries me across. All my efforts seem to be in vain, as water in an unbaked mud-pan being soaked up by the pan itself and my life is falling apart like a lump of mud. I am feeling restless and torn apart to reach my home, the abode of the Lord." In her early stages of spiritual journey Lalla feels disconsolate and fallen apart, since she is yet not able to have complete control over her मन, बुद्धि, अहंकार which continue to disturb her and create impediments in her Spiritual progress. She earnestly aspires to reach her Home, the state of Shiva. In her earnestness she is invoking the Grace of the Lord to ensure her sage passage across this Sansar Sagar.

ललिथ ललिथ वदहा ब(वदुहा बॖ) वाह्य(वह्य)
च़्यता मुहुच प्ययिय चे माय (चान्य माय)
रोज़ि न पत(नॖ पतॖ) लोह-लंगरच(लौह लंगरॖच) छ़ाय
निज स्वरूप क्याज़ि मोठुय हाय ॥४॥

𑆬𑆬𑆴𑆡 𑆬𑆬𑆴𑆡 𑆮𑆢𑆲𑆳 𑆧(𑆮𑆢𑆶𑆲𑆳 𑆧𑆶) 𑆮𑆳𑆲𑇀𑆪(𑆮𑆲𑇀𑆪)
𑆖𑇀𑆪𑆠𑆳 𑆩𑆶𑆲𑆶𑆖 𑆥𑇀𑆪𑆪𑆴𑆪 𑆖𑆼 𑆩𑆳𑆪 (𑆖𑆳𑆤𑇀𑆪 𑆩𑆳𑆪)
𑆫𑆾𑆘𑆴 𑆤 𑆥𑆠(𑆤𑆶 𑆥𑆠𑆶) 𑆬𑆾𑆲-𑆬𑆁𑆓𑆫𑆖(𑆬𑆿𑆲 𑆬𑆁𑆓𑆫𑆶𑆖) 𑆗𑆳𑆪
𑆤𑆴𑆘 𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆘𑆴 𑆩𑆾𑆜𑆶𑆪 𑆲𑆳𑆪 𑇆𑇔𑇆

"I am weeping and wailing for you, O my restless mind. You have been enchanted and caught under the spell of delusion. Nothing, not even the shadow of your worldly possessions, things, and beings, will stand by you. Alas, you have lost your real identity, the resplendent Self, that you are."

Thought by thought in the past, we have programmed our mind to behave as it does in us today, we are therefore, not able to understand that, in reality, we are not body, mind, intellect and limited ego. To turn our mind's attention to the Self, the Aatman, the very life principle in us, is very difficult so long as our pre-occupation remains with the 'not-Self'. An ardent seeker tries to turn his mind's attention to the Self (स्वात्मने शिवस्वरूपाये) in his seat of meditation. Even after continuous and regular meditation, one feels restless because the mind continues to waver. This predicament is encountered by every spiritual seeker because of deep rooted false sense of body identification, which is the perennial spring for sorrows and tragedies of the mortals in this finite world of things and beings. Mata Lalleshwari, who was an ardent aspirant of spiritual awakening, in the above Vaakh, seems to be lamenting at her own predicament and is thus counselling her own mind to let go of this देह अध्यास - false sense of body identification and cut asunder this ensnarement, this मोह जंजाल. Her deep yearning ultimately makes her to seek the guidance and grace of a realised Guru.

श्री ईशावास्य उपनिषद् (मंत्र - ९) / 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆆𑆯𑆳𑆮𑆳𑆱𑇀𑆪 𑆇𑆥𑆤𑆴𑆰𑆢𑇀 (𑆩𑆁𑆠𑇀𑆫 - 𑇙)

A.K.Razdan

अन्धन्तम: प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायागंरता: ॥९॥

"जो लोग केवल अविद्यापूर्ण कार्यकलापों (believers in rites and desire prompted rituals) के अनुशीलन (आचरण) में लगे हैं, वे अज्ञान के गहनतम क्षेत्र में प्रवेश करेंगे (they will enter into blinding darkness), और वे जो तथाकथित ज्ञान (those who are engaged in Avidya, material knowledge and so called meditation) के आचरण में लगे हुए हैं वे उन से भी अधिक निकृष्ट हैं (will fall through into an even greater darkness)."

तात्पर्य

इस मंत्र में विद्या तथा अविद्या का तुलनात्मक अध्ययन (comparative analysis) किया गया है। अविद्या अर्थात् अज्ञान बेशक घातक है, लेकिन तथाकथित विद्या जो पथभ्रष्ट हो उससे भी अधिक घातक होती है। श्रीईशोपनिषद् का यह मंत्र विगतकाल के अपेक्षा आधुनिक काल के लिए अधिक प्रासंगिक है। आधुनिक सभ्यता में जन-शिक्षा (public educational system) में काफ़ी आगे बढ़ गई है, लेकिन इस का परिणाम यह है कि आर्थिक दशा सुधरने के बावजूद (तथापि) आज हम अधिक दु:खी हैं, क्योंकि जीवन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग अर्थात् आध्यात्मिक पहलू को छोड़कर, भौतिक प्रगति (material progress) पर अधिक बल दिया जा रहा है। जहाँ तक विद्या का संबन्ध

श्री ईशोपनिषद् के पहले मंत्र से ही यह स्पष्ट है कि भगवान् प्रत्येक वस्तु के स्वामी है। हम मनुष्यों के विभिन्न वर्ग हैं - कर्मी, ज्ञानी तथा योगी। इन्द्रियतृप्ति के कार्यों में व्यस्त कर्मी कहलाते हैं। आधुनिक सभ्यता में प्राय: ९९.९% लोग उद्योगवाद, आर्थिक विकास परोपकार, राजनैतिक सक्रियतावाद इत्यादि के नाम पर केवल इन्द्रिय तृप्ति के कार्यों में ही लगे हुए हैं जिन में प्रथम मंत्र में वर्णित ईश-चेतना सम्मिलित नहीं है। ऐसे ही लोगों को यहाँ पर मूढ़ या अज्ञानि कहा गया है क्योंकि यह लोग अविद्या की पूजा कर रहे हैं।

𑆃𑆤𑇀𑆣𑆤𑇀𑆠𑆩𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆮𑆴𑆯𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆪𑆼𑇁𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆩𑆶𑆥𑆳𑆱𑆠𑆼𑇅
𑆠𑆠𑆾 𑆨𑆷𑆪 𑆅𑆮 𑆠𑆼 𑆠𑆩𑆾 𑆪 𑆇 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆪𑆳𑆁𑆫𑆠𑆳𑆂 𑇆𑇙𑇆

"𑆘𑆾 𑆬𑆾𑆓 𑆑𑆼𑆮𑆬 𑆃𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟 𑆑𑆳𑆫𑇀𑆪𑆑𑆬𑆳𑆥𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆃𑆤𑆶𑆯𑆵𑆬𑆤 (𑆄𑆖𑆫𑆟) 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆓𑆼 𑆲𑆽𑆁, 𑆮𑆼 𑆃𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤 𑆑𑆼 𑆓𑆲𑆤𑆠𑆩 𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆮𑆼𑆯 𑆑𑆫𑆼𑆁𑆓𑆼, 𑆐𑆫 𑆮𑆼 𑆘𑆾 𑆠𑆡𑆳𑆑𑆡𑆴𑆠 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆑𑆼 𑆄𑆖𑆫𑆟 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆓𑆼 𑆲𑆶𑆍 𑆲𑆽𑆁 𑆮𑆼 𑆇𑆤 𑆱𑆼 𑆨𑆵 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆤𑆴𑆑𑆸𑆰𑇀𑆛 𑆲𑆽𑆁."

𑆠𑆳𑆠𑇀𑆥𑆫𑇀𑆪

𑆅𑆱 𑆩𑆁𑆠𑇀𑆫 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆠𑆡𑆳 𑆃𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆳 𑆠𑆶𑆬𑆤𑆳𑆠𑇀𑆩𑆑 𑆃𑆣𑇀𑆪𑆪𑆤 𑆑𑆴𑆪𑆳 𑆓𑆪𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆃𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆃𑆫𑇀𑆡𑆳𑆠𑇀 𑆃𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤 𑆧𑆼𑆯𑆑 𑆔𑆳𑆠𑆑 𑆲𑆽, 𑆬𑆼𑆑𑆴𑆤 𑆠𑆡𑆳𑆑𑆡𑆴𑆠 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆘𑆾 𑆥𑆡𑆨𑇀𑆫𑆰𑇀𑆛 𑆲𑆾 𑆇𑆱𑆱𑆼 𑆨𑆵 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆔𑆳𑆠𑆑 𑆲𑆾𑆠𑆵 𑆲𑆽𑇅 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆆𑆯𑆾𑆥𑆤𑆴𑆰𑆢𑇀 𑆑𑆳 𑆪𑆲 𑆩𑆁𑆠𑇀𑆫 𑆮𑆴𑆓𑆠𑆑𑆳𑆬 𑆑𑆼 𑆃𑆥𑆼𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆄𑆣𑆶𑆤𑆴𑆑 𑆑𑆳𑆬 𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆍 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆱𑆁𑆓𑆴𑆑 𑆲𑆽𑇅 𑆄𑆣𑆶𑆤𑆴𑆑 𑆱𑆨𑇀𑆪𑆠𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆘𑆤-𑆯𑆴𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆑𑆳𑆦𑇊𑆵 𑆄𑆓𑆼 𑆧𑆞𑇊 𑆓𑆆 𑆲𑆽, 𑆬𑆼𑆑𑆴𑆤 𑆅𑆱 𑆑𑆳 𑆥𑆫𑆴𑆟𑆳𑆩 𑆪𑆲 𑆲𑆽 𑆑𑆴 𑆄𑆫𑇀𑆡𑆴𑆑 𑆢𑆯𑆳 𑆱𑆶𑆣𑆫𑆤𑆼 𑆑𑆼 𑆧𑆳𑆮𑆘𑆷𑆢 (𑆠𑆡𑆳𑆥𑆴) 𑆄𑆘 𑆲𑆩 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆢𑆶:𑆒𑆵 𑆲𑆽𑆁, 𑆑𑇀𑆪𑆾𑆁𑆑𑆴 𑆘𑆵𑆮𑆤 𑆑𑆼 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆳𑆣𑆴𑆑 𑆩𑆲𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟 𑆃𑆁𑆓 𑆃𑆫𑇀𑆡𑆳𑆠𑇀 𑆄𑆣𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆴𑆑 𑆥𑆲𑆬𑆷 𑆑𑆾 𑆗𑆾𑆝𑇊𑆑𑆫, 𑆨𑆿𑆠𑆴𑆑 𑆥𑇀𑆫𑆓𑆠𑆴 𑆥𑆫 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆧𑆬 𑆢𑆴𑆪𑆳 𑆘𑆳 𑆫𑆲𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆘𑆲𑆳𑆀 𑆠𑆑 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆳 𑆱𑆁𑆧𑆤𑇀𑆣

𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆆𑆯𑆾𑆥𑆤𑆴𑆰𑆢𑇀 𑆑𑆼 𑆥𑆲𑆬𑆼 𑆩𑆁𑆠𑇀𑆫 𑆱𑆼 𑆲𑆵 𑆪𑆲 𑆱𑇀𑆥𑆰𑇀𑆛 𑆲𑆽 𑆑𑆴 𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤𑇀 𑆥𑇀𑆫𑆠𑇀𑆪𑆼𑆑 𑆮𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆑𑆼 𑆱𑇀𑆮𑆳𑆩𑆵 𑆲𑆽𑇅 𑆲𑆩 𑆩𑆤𑆶𑆰𑇀𑆪𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆮𑆴𑆨𑆴𑆤𑇀𑆤 𑆮𑆫𑇀𑆓 𑆲𑆽𑆁 - 𑆑𑆫𑇀𑆩𑆵, 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆵 𑆠𑆡𑆳 𑆪𑆾𑆓𑆵𑇅 𑆅𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆴𑆪𑆠𑆸𑆥𑇀𑆠𑆴 𑆑𑆼 𑆑𑆳𑆫𑇀𑆪𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑇀𑆪𑆱𑇀𑆠 𑆑𑆫𑇀𑆩𑆵 𑆑𑆲𑆬𑆳𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆄𑆣𑆶𑆤𑆴𑆑 𑆱𑆨𑇀𑆪𑆠𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆪: 𑇙𑇙.𑇙% 𑆬𑆾𑆓 𑆇𑆢𑇀𑆪𑆾𑆓𑆮𑆳𑆢, 𑆄𑆫𑇀𑆡𑆴𑆑 𑆮𑆴𑆑𑆳𑆱 𑆥𑆫𑆾𑆥𑆑𑆳𑆫, 𑆫𑆳𑆘𑆤𑆽𑆠𑆴𑆑 𑆱𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆠𑆳𑆮𑆳𑆢 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴 𑆑𑆼 𑆤𑆳𑆩 𑆥𑆫 𑆑𑆼𑆮𑆬 𑆅𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆴𑆪 𑆠𑆸𑆥𑇀𑆠𑆴 𑆑𑆼 𑆑𑆳𑆫𑇀𑆪𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆵 𑆬𑆓𑆼 𑆲𑆶𑆍 𑆲𑆽𑆁 𑆘𑆴𑆤 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩 𑆩𑆁𑆠𑇀𑆫 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆴𑆠 𑆆𑆯-𑆖𑆼𑆠𑆤𑆳 𑆱𑆩𑇀𑆩𑆴𑆬𑆴𑆠 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆲𑆽𑇅 𑆎𑆱𑆼 𑆲𑆵 𑆬𑆾𑆓𑆾𑆁 𑆑𑆾 𑆪𑆲𑆳𑆀 𑆥𑆫 𑆩𑆷𑆞𑇊 𑆪𑆳 𑆃𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆴 𑆑𑆲𑆳 𑆓𑆪𑆳 𑆲𑆽 𑆑𑇀𑆪𑆾𑆁𑆑𑆴 𑆪𑆲 𑆬𑆾𑆓 𑆃𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆵 𑆥𑆷𑆘𑆳 𑆑𑆫 𑆫𑆲𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅

Most of us these days pray for material and physical wellbeing, hardly one in a million, that too rarely does Sadhana and regular meditation for Spiritual wellbeing.

Krishna Stuti 7

५ यसनिश सु प्रकाश द्राव ननुय तस ज्यानि
६ न स दयू वौनुय ॥ज्यानानु पानस दयू वो
७ नुय तस ला मकानस दयू वोनुय ॥१
८ हरदं म वोमस लय च़ु कर चित्त ना म तो
९ र्गस तय च़ु कर दोर त्राव ब्रोठ ह्यख वातनुय
१० ॥ ॐ मस त मनस लय च़ु कर ॐ पद सूत्य
११ पान सर च़ु कर ॐ म रोस्त केंह छुनु लारु
१२ नुय ॥३॥ हर सुख तस गछि लारुनुय ॥
१३ गुरुमुख सुय गछि दारुनुय सार छनु

Krishna Stuti 8

१ संसारस युनुय ॥ १ अमृत कुण्ड गछि अमृ
२ त चोनुय पय ह्यथ थानस वातनुय बान
३ छिय भ्युन् भ्युन् अमृत कुनुय ॥१॥
४ जान कर पानस छुस बो क्याह सु स क्याह
५ तय आस क्याह हाह जान ओशुन हुह तूरु
६ नुय ।१॥ ह्यकखै डँग लाय सोदरस अथि
७ ह्यथ दुरदान बोठ चु खस यछि कस लाल
८ स मिलनुय ॥१॥ वासुदीव साक्षी थाव
९ मनस न्यथ छिय प्रारान दर्शनस अनु क्या
१० जानि जगतय प्रोनुय ॥१॥ अमरनाथ
११ वति दव च़ु त्राव नीलकण्ठस पान पुशरा
१२ व दुय त्राविथ भासिय कुनुय ॥१॥
१३ कालन्य चँजे देह यलि पिवान कुस
१४ सन् सु यस निरिथ गव उथा भिहान

Krishna Stuti 9

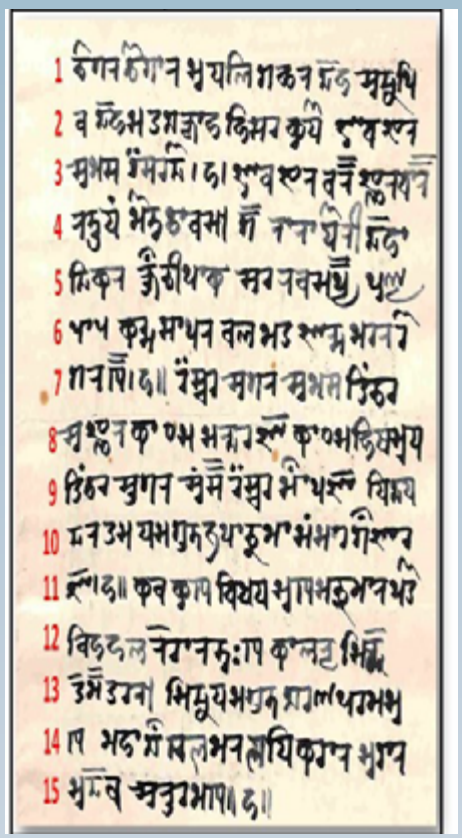

१ भोगन भोगान सु यलि गछन देह अद्ध पि
२ व देहस त च क्याह हिशर छुये जुव जान
३ अमश ईशर दो ।ह । जुव जान वनै ज्ञानवानै
४ न भुयं मोड भावस् गै ना ना योनी देहा
५ दि कन कुंभीपाक अरनवसप्यै पुण्य
६ पाप कर्म शापन वल मत जन्म मरन रो
७ गन खै ।ह । ईश्वर अगन अमश तिंभर
८ अज्ञान काठस सन्दरजे काठ सहिथ सुय
९ तिंभर आगन अंशै ईश्वर साँपजे यि दय
१० दन तस यस गुरु कृपा भ्रमा संसार गँजर
११ जे।ह॥ कव छुख विषय सुखस भ्रमान पतो
१२ विह हल नेरान दुःख कालन्य सि न्दे
१३ तेमै तरन् सिद्ध यस गुरु चरण परम सु
१४ ख महा चँचलमन लयि करान सुरान
१५ सुदेव अन्तरमख ॥ह॥

Krishna Stuti 10

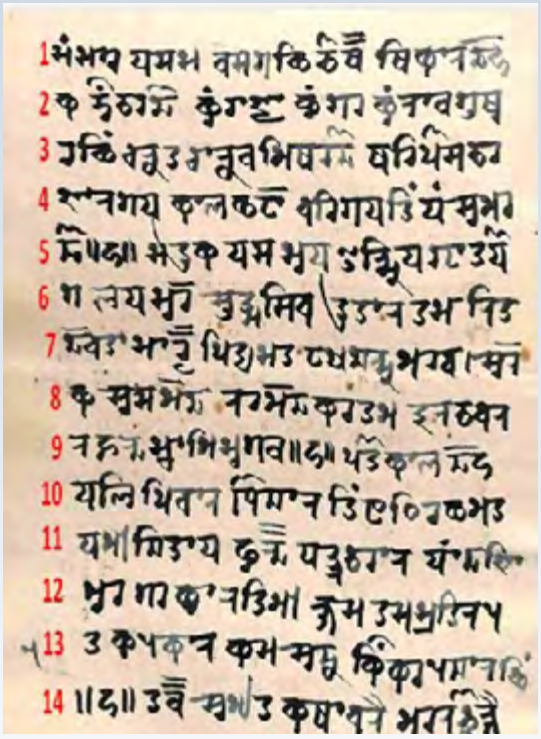

१ संसार यशस वश गछि भो थै थिकान भ हे
२ क र्ड भर दो छुं राज्य छुं गर छुं नाव गुथु
३ र छिं बन्ध त बान्धव मिथर दो थरि पोश भर
४ जन गय काल छटे वरि गय तिंयं अमर
५ दो ॥ह॥सतुक यश सुय इन्द्रिय रट त यो
६ ग लय सुरे आतम शिव तुतान तस नित
७ देवता सार्यै पितृसत ऋष चन्द्र मरय । अने
८ क अशमेद नरमेद करतम त्रनभवन
९ न हुन्द स्वामि स्व गव ॥ ह॥ पतोकाल देह
१० यलि पिवान खोचान तिं टाठि रछमत
११ यम् चिताय हुन्दै यत्न भरान यां दजि
१२ मुर गर छान तिम् कुस तस सूतिन प
१३ त छु पकान कस अद्ध किं कर पचान किं
१४ ॥ह ॥ तवै अमृत कथा वनै मरन भ्रोन्ठै

कृष्ण स्तुति / 𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟 𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑆴

CST

Krishna Stuti - 7

यस निश सु प्रकाश द्राव ननुय (नौनुय)
तस जानु (ज़ानु) नस द्यू वोनुय (वौनुय)
ज़ानुन पानस द्यू वोनुय (वौनुय)
तस ला मकानस द्यू वोनुय (वौनुय) ॥१॥
हरदम वोमस लय च़ (च़ु) कर
चित्त नाम तोर्गस तय च़ (च़ु) कर
दोर त्राव ब्रोंठ ह्योख (ह्यख) वातनुय(वातुनुय) ॥२॥
ओंमस(ओँ मस) त(तु) मनस लय च़(च़ु) कर
ओं(ओँ) पद सूत्य(सुत्य) पान सरु च़(च़ु) कर
ओंम(ओँ) रोस्तु(रोस्त) केंह छुनॅ(छुनु) लारुनुय ॥३॥

𑆪𑆱 𑆤𑆴𑆯 𑆱𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆮 𑆤𑆤𑆶𑆪 (𑆤𑆿𑆤𑆶𑆪)
𑆠𑆱 𑆘𑆳𑆤𑆶 (𑆘𑇊𑆳𑆤𑆶) 𑆤𑆱 𑆢𑇀𑆪𑆷 𑆮𑆾𑆤𑆶𑆪 (𑆮𑆿𑆤𑆶𑆪)
𑆘𑇊𑆳𑆤𑆶𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆱 𑆢𑇀𑆪𑆷 𑆮𑆾𑆤𑆶𑆪 (𑆮𑆿𑆤𑆶𑆪)
𑆠𑆱 𑆬𑆳 𑆩𑆑𑆳𑆤𑆱 𑆢𑇀𑆪𑆷 𑆮𑆾𑆤𑆶𑆪 (𑆮𑆿𑆤𑆶𑆪) 𑇆𑇑𑇆
𑆲𑆫𑆢𑆩 𑆮𑆾𑆩𑆱 𑆬𑆪 𑆖𑇊 (𑆖𑇊𑆶) 𑆑𑆫
𑆖𑆴𑆠𑇀𑆠 𑆤𑆳𑆩 𑆠𑆾𑆫𑇀𑆓𑆱 𑆠𑆪 𑆖𑇊 (𑆖𑇊𑆶) 𑆑𑆫
𑆢𑆾𑆫 𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮 𑆧𑇀𑆫𑆾𑆁𑆜 𑆲𑇀𑆪𑆾𑆒 (𑆲𑇀𑆪𑆒) 𑆮𑆳𑆠𑆤𑆶𑆪(𑆮𑆳𑆠𑆶𑆤𑆶𑆪) 𑇆𑇒𑇆
𑆏𑆁𑆩𑆱(𑆏𑆀 𑆩𑆱) 𑆠(𑆠𑆶) 𑆩𑆤𑆱 𑆬𑆪 𑆖𑇊(𑆖𑇊𑆶) 𑆑𑆫
𑆏𑆁(𑆏𑆀) 𑆥𑆢 𑆱𑆷𑆠𑇀𑆪(𑆱𑆶𑆠𑇀𑆪) 𑆥𑆳𑆤 𑆱𑆫𑆶 𑆖𑇊(𑆖𑇊𑆶) 𑆑𑆫
𑆏𑆁𑆩(𑆏𑆀) 𑆫𑆾𑆱𑇀𑆠𑆶(𑆫𑆾𑆱𑇀𑆠) 𑆑𑆼𑆁𑆲 𑆗𑆶𑆤(𑆗𑆶𑆤𑆶) 𑆬𑆳𑆫𑆶𑆤𑆶𑆪 𑇆𑇓𑇆

Krishna Stuti - 8

हरु मोख(मौख) तस गछि लारुनुय
गुरु मोख(गोरु मोख) सुय गछि दारुनुय
सार छुनु(छुनु) समसारस युनुय ॥१॥
अमृत कुण्ड(अम्रत कुन्ड) गछि अमृत चोनुय(अम्रत चौनुय)
पय ह्यथ थानस वातुनुय
बानु छिय भ्योन भ्योन(ब्यौन ब्यौन) अमृत(अम्रत) कुनुय ॥२॥
ज़ान कर पानस कुस बो क्याह
आंसुस क्याह तय आस्य(आस्य) क्याह
हाहु ज़ान(ज़न) वुशुन हुह तूरुनुय(तुरुनुय)॥ सार ३॥
ह्यकखै डँगु(ह्यकुखय डॅंगु) लाय सोदरस(संदरस)
अथु ह्यथ दुरदानय बोठ चु खस
यछि कस लाल सु मिलनुय॥ सार ४॥
वासुदीव साक्षी(साकशी) थाव मनुस(थव मनस)
न्यथ छिय प्रारान दर्शनस
ओनु(ऑन) क्या ज़ानि ज़ग तॅय(तय) प्रोनुय॥ सार ५॥
अमरनाथ वति दव च़ॅ(च़ु) त्राव
नीलकण्ठस पान पुशराव
द्वय त्राविथ भासिय(बासी) कुनुय ॥ सार ६॥

𑆲𑆫𑆶 𑆩𑆾𑆒(𑆩𑆿𑆒) 𑆠𑆱 𑆓𑆗𑆴 𑆬𑆳𑆫𑆶𑆤𑆶𑆪
𑆓𑆶𑆫𑆶 𑆩𑆾𑆒(𑆓𑆾𑆫𑆶 𑆩𑆾𑆒) 𑆱𑆶𑆪 𑆓𑆗𑆴 𑆢𑆳𑆫𑆶𑆤𑆶𑆪
𑆱𑆳𑆫 𑆗𑆶𑆤𑆶(𑆗𑆶𑆤𑆶) 𑆱𑆩𑆱𑆳𑆫𑆱 𑆪𑆶𑆤𑆶𑆪 𑇆𑇑𑇆
𑆃𑆩𑆸𑆠 𑆑𑆶𑆟𑇀𑆝(𑆃𑆩𑇀𑆫𑆠 𑆑𑆶𑆤𑇀𑆝) 𑆓𑆗𑆴 𑆃𑆩𑆸𑆠 𑆖𑆾𑆤𑆶𑆪(𑆃𑆩𑇀𑆫𑆠 𑆖𑆿𑆤𑆶𑆪)
𑆥𑆪 𑆲𑇀𑆪𑆡 𑆡𑆳𑆤𑆱 𑆮𑆳𑆠𑆶𑆤𑆶𑆪
𑆧𑆳𑆤𑆶 𑆗𑆴𑆪 𑆨𑇀𑆪𑆾𑆤 𑆨𑇀𑆪𑆾𑆤(𑆧𑇀𑆪𑆿𑆤 𑆧𑇀𑆪𑆿𑆤) 𑆃𑆩𑆸𑆠(𑆃𑆩𑇀𑆫𑆠) 𑆑𑆶𑆤𑆶𑆪 𑇆𑇒𑇆
𑆘𑇊𑆳𑆤 𑆑𑆫 𑆥𑆳𑆤𑆱 𑆑𑆶𑆱 𑆧𑆾 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆲
𑆄𑆁𑆱𑆶𑆱 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆲 𑆠𑆪 𑆄𑆱𑇀𑆪(𑆄𑆱𑇀𑆪) 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆲
𑆲𑆳𑆲𑆶 𑆘𑇊𑆳𑆤(𑆘𑇊𑆤) 𑆮𑆶𑆯𑆶𑆤 𑆲𑆶𑆲 𑆠𑆷𑆫𑆶𑆤𑆶𑆪(𑆠𑆶𑆫𑆶𑆤𑆶𑆪)𑇆 𑆱𑆳𑆫 𑇓𑇆
𑆲𑇀𑆪𑆑𑆒𑆽 𑆝𑆀𑆓𑆶(𑆲𑇀𑆪𑆑𑆶𑆒𑆪 𑆝𑆁𑆓𑆶) 𑆬𑆳𑆪 𑆱𑆾𑆢𑆫𑆱(𑆱𑆁𑆢𑆫𑆱)
𑆃𑆡𑆶 𑆲𑇀𑆪𑆡 𑆢𑆶𑆫𑆢𑆳𑆤𑆪 𑆧𑆾𑆜 𑆖𑆶 𑆒𑆱
𑆪𑆗𑆴 𑆑𑆱 𑆬𑆳𑆬 𑆱𑆶 𑆩𑆴𑆬𑆤𑆶𑆪𑇆 𑆱𑆳𑆫 𑇔𑇆
𑆮𑆳𑆱𑆶𑆢𑆵𑆮 𑆱𑆳𑆑𑇀𑆰𑆵(𑆱𑆳𑆑𑆯𑆵) 𑆡𑆳𑆮 𑆩𑆤𑆶𑆱(𑆡𑆮 𑆩𑆤𑆱)
𑆤𑇀𑆪𑆡 𑆗𑆴𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑆳𑆤 𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤𑆱
𑆏𑆤𑆶(𑆏𑆤) 𑆑𑇀𑆪𑆳 𑆘𑇊𑆳𑆤𑆴 𑆘𑇊𑆓 𑆠𑆪(𑆠𑆪) 𑆥𑇀𑆫𑆾𑆤𑆶𑆪𑇆 𑆱𑆳𑆫 𑇕𑇆
𑆃𑆩𑆫𑆤𑆳𑆡 𑆮𑆠𑆴 𑆢𑆮 𑆖𑇊(𑆖𑇊𑆶) 𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮
𑆤𑆵𑆬𑆑𑆟𑇀𑆜𑆱 𑆥𑆳𑆤 𑆥𑆶𑆯𑆫𑆳𑆮
𑆢𑇀𑆮𑆪 𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮𑆴𑆡 𑆨𑆳𑆱𑆴𑆪(𑆧𑆳𑆱𑆵) 𑆑𑆶𑆤𑆶𑆪 𑇆 𑆱𑆳𑆫 𑇖𑇆

(Note: Krishna Stuti as written in standard Kashmiri Devanagari is the CST team understanding based on word meaning)

Krishna Stuti - 9

कालन्य चँजे(कालुनि च़ंजे) देह यलि(येलि) प्यवान
कुस सना सु युस निरिथ(नीरिथ) गव
वोथां भेहान भोगन भोगान(वोथान बेहान बूगन बूगान) ।।
सु यलि गछ़न(येलि गछ़ान)देह अद्ध पिव(अदु प्यव)
देहस त च़(तु चे़) क्याह हिशर छ्युो ज़ुव जान अमश ईश्वर दो ।।हा।।
ज़ुव जान वनै ज्ञानवानै(वनदय ग्यानवानय)
न भूयं(बूयम) मोड(मूड) भावस्(बावस) गै(गंय)
नाना योनी देहादिकन
कुंभीपाक(कुम्बीपाक) अरन(नरकन) वस प्यै(प्यय) ।।हा।।
पुण्य(पोन्य) पाप कर्म शापन वलिमत्य(वलिमुत्य)
जन्म मरन रोगन खै(रूगन खेयि)ईश्वर अग्न अमश तिंबर
अज्ञान(अग्यान) काठस सन्दरज़े(सन्दुरज़े) ।।हा।।
काठस हेथ(ह्यथ) सुय तिंबर
आगन(अंगुन) अंशै ईश्वर साँपज़े(सांपज़े) यि दय दी नु तस
गुरु कृपा(क्रुपा) भ्रमा संसार गँज़रज़े(गंज़ुरज़े) ।।४।।
कव् छुक विषय सोखस भ्रमान(कथ छुख विशय सोखस ब्रमान)
पतो विह फल नेरान दो:ख(दोख)
कालुन्य सिन्दे तिमै तरन्(कालुनि सुन्दे तिमय तरन)
सिद्ध(सिद्द) यस गुरु(गोरु) च़रण(च़रन) परम सोख(सोख) ।।हा।।
महा चं़चल(चं़चल) मन लयि करान
सोरान(सोरान) सु देव अंतर मोख(मोख) ।।ह ।।

Krishna Stuti - 10

संसार यशस वश गछि भो(बो) थै(तय)
थिकान(थेकान) देहुक डँभर(आडंबर) दो(दो)
छुंम राज्य(छुम राज) छुम गर(गर्) छुम नाव गुथुर
छिम बन्ध(बंद) त बान्धव(बांदव) मिथर दो
थरि पोश भर् जन(पोश बर् ज़न) गयि(गंयि) काल् छटै(छ़टे)
वरि गयि तिम यिम अमर दो(दो) ।।हा।।
सतुक(सतुक्य) यश सुय (युस) इन्द्रिय रट(रटे)
तु योगु लय सुरे(सोरे) आतम(आत्म्) शिव
तोतान्य(तोतव् करन) तंस(तस) नित(नेत) देवता
सार्यै(दिवता सारी)
पितृ सतऋष चन्द्रम(पित्र सतोरेश च़न्दरम) रव ।
अनेक अशमेद नरमेद कंर्य तंम्य
त्रेनभवनन(त्रेन बवनन) हुन्द स्वामि सु गव ।। हा।।
पोत काल् देह यलि(येलि) पेवान
खोचान(खोच़ान) तिम टाठि रछमत यम्(टांठ्य रछमुत्य यिम)
चितायि(च़ेनतायि) हुन्दै(हुंदे) यत्न भरान(बरान)
यां(या) दजि मुर [ग]छान तिम्(गछ़ान तिम)
कुस तस सॅत्यन(सुत्यन) पतु छॅ(छु) पकान
कॅस अद्ध किंकर(कस अदु किंकर) पचान किं ।।ह ।।

योगिनी माता च़ु छख पानु /

Indu Pandita

योगिनी माता च़ु छख पानु , कर च़ु पनुन प्रादुर्भाव
च़ेय मंज़ छु सोरुय ग्यानुक सार, जगतस च़ु वथ हाव
योगिनी माता च़ु छख पानु , कर च़ु पनुन प्रादुरभाव !

ग्यान की तीज़ु सुत्य प्रज़लाव पनुन पान
अंद्रिमि प्रकाशु सुत्य बन च़ु दीप्तीमान
योगिनी माता च़ु छख पानु , कर च़ु पनुन प्रादुरभाव!
ब्योन ब्योन वुछ क्या छ यि करामात!
यिम शीनु बाल, यिम कुल्य तु यि सबज़ार
मगर
बेखबर बेहोश तु नादान! छु हर बशर परेशान!
च़ेतसुय येलि पेयि परज़ुनावुन पनुन पान
नेरमल तु शोद मन ची करि पहचान
ज़ानि येलि ॐ छु सारिकुय आदार
ॐकुय नाद तेलि बोज़ि च़्वपार्य
द्यानुच तु ग्यानुच करि कथा च़्वपार्य !
ब्रमांडपेठ छ यि आकाश वांनी!
सती सरुच छु यि निशानी!
रिशी कश्यप संज़ छु यि मेहरबानी!
बेयि अकि लटी सु दरशुन वुछहांव
माता शारदा हुंज़ बारगाह वुछहांव
वेद मंत्रन हुंज़ गरज़ना बोज़ुहांव
हवनन तु यग्यन मंज़ आहुति दिमहांव!

मायायि ब्रमरिथ छि अंस्य
अनिगटिस मंज़ पेमुत्य छि अंस्य
वतुहावुच च़ुय छख मांजी
दूर क्या ज़ि छख बिहित मांजी
कर ख्यमा पापन सान्यन
बखुचज़ि अपरादन सान्यन
क्याज़ी माता छनु ज़ांह कोमाता आसान!
लोलु नाद छय लायान शारदा माता
बेयि अकि लटि दर्शुन हाव माता!
ब्रम्चारनी च़ुय छख , तु च़ुय छख रुद्रांनी
विद्या दायिनी ,कमल लोचनी
शोबायिमान राज़ुरांनी च़ुय छख
आसिनय च़े म्योन नमस्कार माता
अन्तरमन प्यठ मर्यान्य यिम बाव
च़े अरपन माता
शत शत नमन आंसिनय च़े माता
शत शत नमन आंसिनय च़े माता!

Induji had a vision during meditation when she saw Mata Sharada speaking to her. She has penned down a few lines as she recollected. Besides, she has also written a few lines in her praise. Editorial team has only helped in converting the lines in Standard Kashmiri Devanagari promoted by Core Sharada Team.

कश्मीर के संत स्वामी राम जी / ਕਸ਼ਮੀਰ ਕੇ ਸੰਤ ਸ੍ਵਾਮੀ ਰਾਮ ਜੀ

Gaurav Vaidya

समाधि में डूबे हुए, वे 20 वर्षों तक कभी बाहर नहीं निकले - स्वामी रामजी 9वीं शताब्दी के मध्य में श्रीनगर के चिंकराल मोहल्ले में शुकदेव नामक एक ब्राह्मण रहते थे। ब्राह्मण एक पुरोहित थे और पवित्र जीवन जीते थे । 1852 ई. (1910 विक्रमी) के आसपास उनके यहां एक पुत्र का जन्म हुआ। उनकी कुंडली के अनुसार, उनके जन्म के समय ही भविष्यवाणी की गई थी कि बच्चा बड़ा होकर एक महान संत बनेगा। उस समय कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि स्वामी रामजी आगे चलकर अपने जीवन में कितनी महान आध्यात्मिक ऊँचाइयाँ प्राप्त करेंगे।

बालक रामजी को पुरोहित के रूप में शिक्षा मिली; अपनी युवावस्था में वे श्री लाला जू कोकरू के संपर्क में आये, जो चिंतनशील आनुवंशिकता के कारण कश्मीर शैव धर्म में पारंगत थे। चूँकि रामजी का रुझान भी आध्यात्मिक था, इसलिए उन्होंने श्री लाला जू से शैव दर्शन का अध्ययन किया। उनकी बुद्धिमत्ता और रुचि ने उन्हें दर्शनशास्त्र के इस विद्यालय की स्पष्ट समझ प्रदान की।

रामजी अपने गुरु, श्री मानस राम मोंगा (या मनेह काक) से मिले, जो कश्मीर शैव धर्म की कुला प्रणाली में उस समय के एक महान रहस्यवादी संत थे। उनके पास महान आध्यात्मिक उपलब्धियाँ थीं और वे चाहते थे कि उनका दर्शन शिष्य उत्तराधिकार के माध्यम से फैले। एक सिद्ध योगी होने के नाते गुरु ने रामजी में सच्चा शिष्य पाया और अपने दिव्य स्पर्श से उनमें योग का संचार किया।

रामजी ने स्वयं को पूरी निष्ठा से योगाभ्यास के प्रति समर्पित कर दिया। उन्होंने व्यावसायिक तौर पर पुरोहित का काम जारी रखा और अपने शुरुआती जीवन के कुछ समय तक नियमित रूप से पूजा और धार्मिक संस्कार आयोजित करने के लिए यजमान के घर जाते रहे।

विद्वत्तापूर्ण प्रदर्शनी

आगम और यौगिक चमत्कारों की उनकी विद्वतापूर्ण व्याख्याओं से कई और भक्त और प्रशंसक, जिनमें अधिकतर गृहस्थ थे, स्वामी रामजी की ओर आकर्षित हुए। वह कश्मीर में अपने समय के सबसे महान योगी थे। उनका केवल रूप या स्पर्श ही व्यक्ति को परिवर्तित बना देता था। उनके पास अद्भुत शक्तिपात था। कहा जाता है कि कश्मीर के तत्कालीन शासक और एक समझदार भक्त महाराजा प्रताप सिंह भी आशीर्वाद के लिए स्वामी रामजी के पास आए थे। कहा जाता है कि अपने बाद के वर्षों में स्वामी रामजी अपने आसन (सीट) पर छाती पर घुटने रखकर बैठे रहे और 20 वर्षों तक बाहर नहीं निकले। यहां संत-दार्शनिक ने योग्य शिष्यों को योग संबंधी निर्देश दिए और अपने श्रोताओं को त्रिक दर्शन पर घंटों तक प्रवचन दिए, जो उन्हें अबाधित समाधि में डूबे हुए देखकर मंत्रमुग्ध हो गए।

(अपने स्वयं के शिष्यों को प्रबुद्ध करने के लिए स्वामी रामजी ने प्रतिदिन चार घंटे लगातार समाधि में रहकर, शरीर में रहते हुए भी, अपने स्वयं के शैवत्व को खुलेआम प्रदर्शित किया)।

उनकी सिद्धियों के बारे में कहानियाँ अभी भी घाटी में प्रचलित हैं। जिस अलग घर में स्वामी रामजी रहते थे वह अब प्रसिद्ध श्री राम-त्रिक-शैवाश्रम है। भक्तों और प्रशंसकों को इस समय तक शैव-आगमों के भक्ति भजन और पाठ करते हुए सुना जाता है।

स्वामी रामजी ने 1915 ई. (1971 विक्रमी माघ कृष्णपक्ष चतुर्दशी) को दिव्य सार्वभौमिक स्व में विलीन होने के लिए शरीर छोड़ दिया, जिसके वे अवतार थे।

दिव्य उत्साह

स्वामी रामजी को कभी-कभी उनके करीबी शिष्यों ने दैवीय उत्साह में परम-चेतना के अनुभवों को बोलते हुए सुना था और यहां उनकी कलम से एक श्लोक (श्लोक) दिया गया है:

(गुरु के मुख से सत्य को स्वीकार करने पर, जिनके शब्द पवित्र पाठ हैं, मेरी सारी अज्ञानता दूर हो गई। मन (चित्त) समानता के प्रेमपूर्ण अमृत का स्वाद लेने के लिए उत्सुकता के सागर में गहराई से गोता लगाने लगा। विचार का जाल अयोग्य ध्यान की स्थिति में शांत हो गया। इस प्रकार अव्यक्त सर्वोच्च चेतना अपनी पूर्णता में मेरे सामने प्रकट होती है।) स्रोत: कोशुर समाचार

CST

प्रश्नोत्तरी के बारे में जानकारी

- प्रश्न शारदा लिपि में हैं।
- प्रतियोगी शारदा वर्णमाला (मातृका के पिछले अंकों में प्रकाशित), कोर शारदा टीम द्वारा प्रकाशित पुस्तकों आदि की सहायता ले सकते हैं।
- प्रत्येक प्रश्न के लिए चार विकल्प हैं।

उतर ,अपने व अपने शहर के नाम के साथ maatrika.cst@gmail.com पते पर भेजें।

सही उत्तर देने वाले का नाम अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

शारदा दिवस पर प्रतिभागियों को किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए सबसे अधिक सही उत्तरों के लिए विशेष पुरस्कार दिया जाये गा। कोर शारदा टीम के सदस्य प्रश्नोत्तरी में भाग ले सकते हैं, लेकिन वार्षिक पुरस्कार के पात्र नहीं होंगे।

प्रश्नोत्तरी के बारे में जानकारी

* प्रश्न शारदा लिपि में हैं।

* प्रतियोगी शारदा वर्णमाला (मातृका के पिछले अंकों में प्रकाशित), कोर शारदा टीम द्वारा प्रकाशित पुस्तकों आदि की सहायता ले सकते हैं।

* प्रत्येक प्रश्न के लिए चार विकल्प हैं।

उतर ,अपने व अपने शहर के नाम के साथ maatrika.cst@gmail.com पते पर भेजें।

सही उत्तर देने वाले का नाम अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

शारदा दिवस पर प्रतिभागियों को किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए सबसे अधिक सही उत्तरों के लिए विशेष पुरस्कार दिया जाये गा। कोर शारदा टीम के सदस्य प्रश्नोत्तरी में भाग ले सकते हैं, लेकिन वार्षिक पुरस्कार के पात्र नहीं होंगे।

१. ऐसा माना जाता है कि देवी शारदा ने उन्हें, दर्शन दिए थे।
  अ. ऋषि कश्यप
  आ. ऋषि अगस्त्य
  इ. ऋषि शाण्डिल्य
  ई. ऋषि भृगु

२. कहाँ नवनिर्मित शारदा देवी मंदिर है,
  अ. सोपोर
  आ. टीटवाल
  इ. अवंतीपोरा
  ई. बारामुला

३. राजतरंगिणी किसके द्वारा लिखी गई थी
  अ. बिल्हण
  आ. कल्हण
  इ. मंखक
  ई. श्रीवर

४. वितस्ता नदी को अन्य किस नाम से जाना जाता है?
  अ. नीलम
  आ. किशनगंगा
  इ. सरस्वती
  ई. झेलम

५. सतीसर किसका नाम है
  अ. झील
  आ. गुरु
  इ. घाटी
  ई. देवता

Click HERE to Buy the complete Book
अल
(लौकी/ Bottle gourd)
अलमार्य
(अलमारी/ Cupboard)
अथुवास
(हाथ मिलाना/ Handshake)
Excelsior
अखबार
समाचार पत्र/ Newspaper
अट्होर
(कान का आभूषण/ Ear ornament)
अम्ब
(Mango/ आम)
Page1/०
Created by:- Core Sharada Team Foundation

हारुक्य बड्य दोह / 𑆲𑆳𑆫𑆶𑆑𑇀𑆪 𑆧𑆝𑇀𑆪 𑆢𑆾𑆲

Kishni Pandita

हारुन्य त्रे दोह- सतम आंठम तु बेयि नवम छि कशीरि मंज़ शक्ति पूज़ायि खांतरु स्यठा शोब यिवान मानुनु। यिम छि शारिकाजी हुंद्य प्रदुर्बाव। हारु सतम छि सिरी बगवान स खोश करनु खांतरु तमिस समर्पित यिवान करनु। कंशीरि मंज़ छि यिपरम्परा वैदिक कालु ब्रोंठु प्यठु पकान आमुच़। मा हराज ललितादित्यन ओस मार्तंड मंदर सिरी बगवानस खांत रु बनावनोवमुत। विश्नु पुरानस मंज़ छु लीखित कि अमि दोहु छु अख अद्यात्मिक च़्खुर पांथरिस प्यठ यिवान बनावनु यथ संस्क्रत पांठ्य छि मंडल वनान। तवय छि अथ कांशिर्य पांठ्य हारु म़डुल वनान। अथ मंडलस मंज़ छि पनुनिस इश्ट दीवी या दिवता सुंज़ शकुल या प्रतीक बनावान। अमि दोहन छि खिर तु तंहर बनावान तु सूर्य बगवानस बोग लागान। हा रु नवम छु माता शारिकायि हुंद ज़ादोह। हांरी पर्बतस प्यठ छु तस अरुदाह बुज़ बवानी मातायि हुंद निवास। अति छि सो अंकिस शिलायि (पल/चटान) हुंदिस रूपस मंज़, यथ सादकन वोत हतु बद्यव वुरियव प्यठु स्यंदुर म थान। दपान अथ शिलायि प्यठु युस श्री च़्खुर छु यि छु पानय प्रखट्योमुत। शारिकायि हुंद यि अस्थापन, हांरी प र्बत छु स्यठा प्रोन शक्ति पीठ। दपान छि अथ अस्थापन स सांत्य छि अख दंत कथा जुडिथ। जलोदबव, अख स्य ठा ताक़तवर राख्युस(राक्षस) ओस अंथ्य लोंकुटिस पहा डुचि जायि पांनिस मंज़ रोज़ान। राख्युस ओस रेशिन स्य ठा परेशान करान। हारु आंठम दोह कंर यिमव रेशव माता पार्वती हुंज आरादना। दपान छि दोयमी दोहु रोंट माता यि हारि हुंद रूप तु आयि तोंति मंज़ अख कनि फोल ह् यथ युस तंम्य अंथ्य पांनिस मंज़ त्रोव। यि कनि फोल ग व बडान- बडान तु बन्यव अख लोंकुट पहाड। यि जलो दबव गव अंथ्य तल। यि चमत्कार गव हारु नवम दोह। तवय छि अथ दोंहस यीच़ाह महिमा।

शुर्यन हुंद्य बॉथ

माजि कुन

ओकुस बोकुस गिंदान थोकुस
ब्वछि हय लंजिम गिंदान बाल
खास्यन तु प्यालन द्वद मे थावुम
कोज नय ख्योम तय ख्यमय काल

𑆩𑆳𑆘𑆴 𑆑𑆶𑆤

𑆏𑆑𑆶𑆱 𑆧𑆾𑆑𑆶𑆱 𑆓𑆴𑆁𑆢𑆳𑆤 𑆡𑆾𑆑𑆶𑆱
𑆧𑇀𑆮𑆗𑆴 𑆲𑆪 𑆬𑆁𑆘𑆴𑆩 𑆓𑆴𑆁𑆢𑆳𑆤 𑆧𑆳𑆬
𑆒𑆳𑆱𑇀𑆪𑆤 𑆠𑆶 𑆥𑇀𑆪𑆳𑆬𑆤 𑆢𑇀𑆮𑆢 𑆩𑆼 𑆡𑆳𑆮𑆶𑆩
𑆑𑆾𑆘 𑆤𑆪 𑆒𑇀𑆪𑆾𑆩 𑆠𑆪 𑆒𑇀𑆪𑆩𑆪 𑆑𑆳𑆬

लघुभट्टारक प्रणीत लघुस्तवी / ಲಘುಭಟ್ಟಾರಕ ಪ್ರಣೀತ ಲಘುಸ್ತವೀ

Ketu Chandra Shekar

(This is in continuation to the article series started in June 23 edition of Maatrika)

Verse 2:

या मात्रा लपुसीलताततनुलसत्तन्तू-स्थितिस्पर्द्धिनी
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजननव्यापारबद्धोद्यमा
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननीगर्भेऽर्भकत्वं नराः ॥ २॥

ಯಾ ಮಾತ್ರಾ ಲಪುಸೀಲತಾತನುಲಸತ್ತನ್ತು-ಸ್ಥಿತಿಸ್ಪರ್ದ್ಧಿನೀ
ವಾಗ್ಬೀಜೇ ಪ್ರಥಮೇ ಸ್ಥಿತಾ ತವ ಸದಾ ತಾಂ ಮನ್ಮಹೇ ತೇ ವಯಮ್ ।
ಶಕ್ತಿಃ ಕುಂಡಲಿನೀತಿ ವಿಶ್ವಜನನವ್ಯಾಪಾರಬದ್ಧೋದ್ಯಮಾ
ಜ್ಞಾತ್ವೇತ್ಥಂ ನ ಪುನಃ ಸ್ಪೃಶನ್ತಿ ಜನನೀಗರ್ಭೇಽರ್ಭಕತ್ವಂ ನರಾಃ ॥ ೨॥

Padartha:

हे देवि! O Mother!; तव Your; प्रथमे वाग्बीजे first Vagbija (i.e. ऐं) ; लपुसी लता Cucumber creeper; तनु body; स्थिति existence; लसत् edge; तन्तु slim as a thread; स्पर्धिनी competing; या that which; मात्रा Kalaa; स्थिता situated; विश्व जनन व्यापार in the process of creating the world; बहु उद्यमम् ever ready to carry out; ताम् that Kalaa; कुण्डलिनी शक्ति इति as Kundalini Shakti; सदा always; ते Your; वयम् we; मन्मने consider; नराः men; इत्थम् thus; ज्ञात्वा having known; जननी गर्भे in the womb of mother; पुनः again; अर्भकत्वम् as an infant ; न स्पृशन्ति shall not attain.

Shlokartha:

0 Mother! The Vagbhava bija (i.e. ऐं) which is the first among the three bijaksharas of the mantra which constitute your subtle form (Sukshma sharira) contains the subtle kalaa (form of energy) called Kundalini which competes with tendrils of the cucumber creeper (i.e., it is as slender as the tendrils growing on at the tip of the cucumber creeper) and that kalaa is ever contemplated as ever engaged in the creation of the universe by us, your devotees. If others too realize thus, then they shall never have to enter a mother's womb again (i.e., shall not have any further births).

Bhavartha:

The first Bijakshara of Balatripurasundari Mantra is ऐं, which is also called as the Vagbhava Bija, since it is the source of all the Shabdaprapancha i.e., sound or nada aspects represented by the Vedas. The proof can be inferred by considering the following fact.

Rigveda's first Sukta: अग्निमीले पुरोहितम्; Starting Letter: अ

Yajurveda's first Sukta: इषे त्वोर्जे त्वा: Starting Letter: इ

Samaveda's first Sukta: अग्न आयाहि वीतये; Starting Letter: अ

By applying the rules of Sandhi: अ+ इ= ए , and अ+ ए= ऐ

ऐं Being the Vagbhava Bija is thus the source of all the Sabdaprapancha represented by the Vedas and is thus the essential principle to contemplate upon for realizing the Supreme Consciousness. The resting place of Kundalini in a Sadhaka's body is the Triangle in the center of Muladhara chakra, which has four petals. Thus, the letter ऐ is also called as Yoni or Trikona, because of its resemblance which represented in Sharada.

One can realise the presence of Kundalini during deep internal contemplation, Antaryaga, as substantiated by Pavnasamhita.

आधारकमलं तत्र चतुर्भिः सहितम् दलैः
तस्य मध्ये महाभागे योनिः सिद्धनमस्कृते
तस्यां एष्यति अभिव्यक्तिम् अन्तर्यागे महेश्वरि । (पवनसंहिता)

ಆಧಾರಕಮಲಂ ತತ್ರ ಚತುರ್ಭಿಃ ಸಹಿತಮ್ ದಲೈಃ
ತಸ್ಯ ಮಧ್ಯೇ ಮಹಾಭಾಗೇ ಯೋನಿಃ ಸಿದ್ಧನಮಸ್ಕೃತೇ
ತಸ್ಯಾಂ ಏಷ್ಯತಿ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಮ್ ಅನ್ತರ್ಯಾಗೇ ಮಹೇಶ್ವರಿ । (ಪವನಸಂಹಿತಾ)

The word मात्रा used in the verse indicates that ऐं is to be contemplated with its kala which here is पश्यन्ती वाक् कला प्रथमबीजस्था पश्यन्ती इति अवधारय ।

इयमेव पराशक्तिः वाचोयोनिः सनातनी

i.e. know the kala of the first bija to be पश्यन्ती वाक् which is the supreme energy and source of all articulate sounds. One should contemplate and realise that Kundalini is the source of all articulate sounds from अ to क्ष and by tracing the source of this nada element, the sadhaka attains siddhi in rising of the kundalini and therefore reaches perfect union with Parashiva and escapes the cycle of transmigration.

अभिनवगुप्त - दूरदर्शी दार्शनिक और तंत्र विद्वान /
ಅಭಿನವಗುಪ್ತ - ದೂರದರ್ಶಿ ದಾರ್ಶನಿಕ ಮತ್ತು ತಂತ್ರ ವಿದ್ವಾನ

Prasidhaji

Abhinavagupta, an eminent figure in the history of Indian philosophy and Tantra, was born in Kashmir during the 10th century CE. His contributions to various disciplines, including aesthetics, philosophy, and religious thought, continue to inspire scholars and practitioners to this day. Abhinavagupta's profound insights and extensive commentaries on ancient texts have solidified his place as one of the most influential thinkers of his time. This article explores the life, teachings, and philosophical legacy of Abhinavagupta, shedding light on his remarkable intellectual prowess and his enduring impact on the cultural and spiritual landscape of India.

Life and Background:

Abhinavagupta was born into a scholarly family in Kashmir, India, around the year 950 CE. He received a comprehensive education, studying various subjects such as logic, grammar, literature, and the Vedas. He immersed himself in the study of Tantra, a spiritual and ritualistic tradition that seeks to transcend the limitations of ordinary perception and connect with the divine. Under the guidance of his guru, he mastered several Tantric practices and achieved profound spiritual experiences. These experiences became the foundation of his philosophical inquiries and formed the basis of his later teachings.

Philosophical Contributions:

Abhinavagupta's philosophical contributions span a wide range of topics, including aesthetics, epistemology, ontology, and metaphysics. His primary work, "Tantraloka," is a magnum opus that explores the philosophy of Kashmir Shaivism, a non-dualistic tradition emphasizing the unity of the individual soul (atman) with the universal consciousness (Shiva). Abhinavagupta's writings not only provide a comprehensive understanding of Tantra but also elucidate the profound connections between art, aesthetics, and spirituality.

One of Abhinavagupta's notable theories is the concept of "Rasa" (aesthetic experience) in Indian aesthetics. He developed the theory of Rasa, which suggests that art is capable of evoking specific emotions and transcendent experiences in the viewer or participant. According to him, aesthetic experience is a powerful means to access higher states of consciousness and spiritual realization.

Furthermore, Abhinavagupta's commentaries on classical Indian texts, such as the Natya Shastra (a treatise on performing arts), the Bhagavad Gita, and the Upanishads, are highly regarded for their profound insights and interpretations. His commentaries not only elucidate the meaning and significance of these texts but also highlight their practical relevance for spiritual seekers.

Legacy and Influence :

Abhinavagupta's legacy extends far beyond his lifetime. His works had a significant impact on subsequent generations of philosophers, theologians, and artists. His ideas deeply influenced the development of Kashmir Shaivism and Tantric philosophy, shaping the intellectual and spiritual landscape of Kashmir for centuries to come.

Moreover, Abhinavagupta's theories on aesthetics and the philosophy of art have had a lasting influence on Indian and global artistic traditions. His profound understanding of the connection between aesthetic experience and spiritual transformation continues to inspire artists, dancers, musicians, and performers around the world.

Abhinavagupta's teachings have also found resonance in contemporary studies of consciousness, psychology, and cognitive science. Scholars recognize the relevance of his theories on aesthetics, emotion, and the nature of subjective experience, shedding new light on the understanding of human perception and the transformative power of art.

Abhinavagupta of Kashmir was a visionary philosopher, Tantra scholar, and a beacon of knowledge in the cultural and intellectual history of India. His philosophical contributions, particularly in the realms of aesthetics, Tantra, and spirituality, continue to captivate scholars and practitioners alike. Abhinavagupta's profound insights into the interconnectedness of art, aesthetics, and spirituality reveal the transformative potential of aesthetic experience. His legacy as a thinker, commentator, and spiritual guide lives on, inspiring individuals to explore the depths of consciousness, appreciate the beauty of art, and seek spiritual enlightenment through the path of Tantra.

आचार्य श्री अभिनवगुप्त आलेख / 𑆄𑆖𑆳𑆫𑇀𑆪 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆃𑆨𑆴𑆤𑆮𑆓𑆶𑆥𑇀𑆠 𑆄𑆬𑆼𑆒

A.K.Razdan

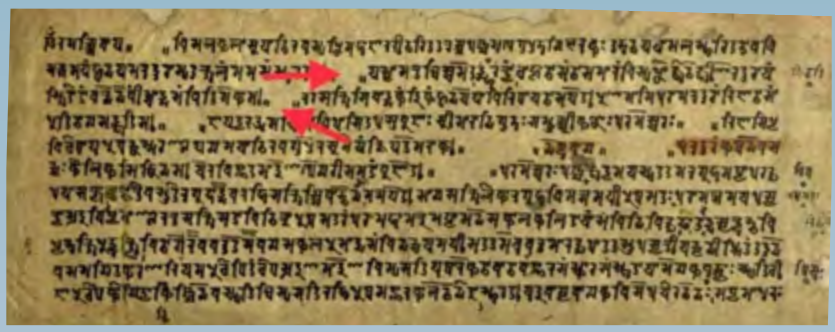

Five invocation verses of Pratrimshikavivrana of Acharya Shri Abhinavgupt. (Devnagri Transliteration from the Sharda Manuscript appended with the post. Main text of the Vivarana starts from the portion highlighted with red ink in the manuscript). 1st verse gives Author's (Shri Abhinavgupt's) parentage and desire for spiritual wellbeing. 2nd and 3rd verses are expressive of homage to Devi, the Mother Goddess. 4th verse is homage to Guru (spiritual guides) and 5th verse is indicative of Author's (Shri Abhinavgupt's) purpose of the commentary on Paratrimshika.

ॐ नमश्शिवाय ॥।॥

विमलकलाश्रयाभिनवसृष्टिमहा जननी भरिततनुश्च पञ्चमुखगुप्तरुजिरजनकः ।
तदुभययामलस्फुरितभावविसर्गमयं हृदयमनुत्तरामृतकुलं मम संस्फुरतात् ॥१॥

𑇄 𑆤𑆩𑆯𑇀𑆯𑆴𑆮𑆳𑆪 𑇆𑇆
𑆮𑆴𑆩𑆬𑆑𑆬𑆳𑆯𑇀𑆫𑆪𑆳𑆨𑆴𑆤𑆮𑆱𑆸𑆰𑇀𑆛𑆴𑆩𑆲𑆳 𑆘𑆤𑆤𑆵 𑆨𑆫𑆴𑆠𑆠𑆤𑆶𑆯𑇀𑆖 𑆥𑆚𑇀𑆖𑆩𑆶𑆒𑆓𑆶𑆥𑇀𑆠𑆫𑆶𑆘𑆴𑆫𑆘𑆤𑆑𑆂 𑇅
𑆠𑆢𑆶𑆨𑆪𑆪𑆳𑆩𑆬𑆱𑇀𑆦𑆶𑆫𑆴𑆠𑆨𑆳𑆮𑆮𑆴𑆱𑆫𑇀𑆓𑆩𑆪𑆁 𑆲𑆸𑆢𑆪𑆩𑆤𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫𑆳𑆩𑆸𑆠𑆑𑆶𑆬𑆁 𑆩𑆩 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆦𑆶𑆫𑆠𑆳𑆠𑇀 𑇆𑇑𑇆

"May my heart, which is full of the Supreme Quintessence of Reality (अनुत्तरामृतकुलम्), and which is the product of the exuberance of emotions due to the mating of both my father Pachmukhgupt and my mother Vimalkala, whose delight consisted in giving birth to me (Abhinavgupt) expand in Supreme Consciousness.

यस्यामन्तर्विशवमेतत्स्फुरंन्त्यां बाह्याभासं भासमानं विसृष्टौ ।
क्षोभे क्षीणेनुत्तरायां स्थितौ तां वन्दे देवीं स्वात्मसंवित्तिमेकाम् ॥२॥

𑆪𑆱𑇀𑆪𑆳𑆩𑆤𑇀𑆠𑆫𑇀𑆮𑆴𑆯𑆮𑆩𑆼𑆠𑆠𑇀𑆱𑇀𑆦𑆶𑆫𑆁𑆤𑇀𑆠𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆧𑆳𑆲𑇀𑆪𑆳𑆨𑆳𑆱𑆁 𑆨𑆳𑆱𑆩𑆳𑆤𑆁 𑆮𑆴𑆱𑆸𑆰𑇀𑆛𑆿 𑇅
𑆑𑇀𑆰𑆾𑆨𑆼 𑆑𑇀𑆰𑆵𑆟𑆼𑆤𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫𑆳𑆪𑆳𑆁 𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆿 𑆠𑆳𑆁 𑆮𑆤𑇀𑆢𑆼 𑆢𑆼𑆮𑆵𑆁 𑆱𑇀𑆮𑆳𑆠𑇀𑆩𑆱𑆁𑆮𑆴𑆠𑇀𑆠𑆴𑆩𑆼𑆑𑆳𑆩𑇀 𑇆𑇒𑇆

"I bow to that one Goddess in the form of Self-Consciousness, in Whom this Universe which appears as an external objective existence in the state of manifestation, shining on the extinction of that delusive understanding, which makes one identify oneself with ones vehicles (body, mind, intellect equipment), inwardly in the state of Supreme Reality."

नरशक्तिशिवात्मकं त्रिकं हृदये या विनिधाय भासयेत् ।
प्रणमामि परामनुत्तरां निजभासां प्रतिभाचमत्कृतिम् ॥३॥

𑆤𑆫𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆯𑆴𑆮𑆳𑆠𑇀𑆩𑆑𑆁 𑆠𑇀𑆫𑆴𑆑𑆁 𑆲𑆸𑆢𑆪𑆼 𑆪𑆳 𑆮𑆴𑆤𑆴𑆣𑆳𑆪 𑆨𑆳𑆱𑆪𑆼𑆠𑇀 𑇅
𑆥𑇀𑆫𑆟𑆩𑆳𑆩𑆴 𑆥𑆫𑆳𑆩𑆤𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫𑆳𑆁 𑆤𑆴𑆘𑆨𑆳𑆱𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴𑆨𑆳𑆖𑆩𑆠𑇀𑆑𑆸𑆠𑆴𑆩𑇀 𑇆𑇓𑇆

"I offer my homage to that delight of That Consciousness which is Supreme (पराम) and Unsurpassable, which is Effulgent by its own light, which is having within Itself the group of the three, Nara, the phenomenal reality, Shakthi, the Universal Spiritual Energy and Shiva which makes them appear externally."

जयत्यनत्पमहिमा विपाशतिपशुव्रजः ।
श्रीमानाद्यगुरुः शुंभः श्रीकण्ठः परमेश्वरः ॥४॥

𑆘𑆪𑆠𑇀𑆪𑆤𑆠𑇀𑆥𑆩𑆲𑆴𑆩𑆳 𑆮𑆴𑆥𑆳𑆯𑆠𑆴𑆥𑆯𑆶𑆮𑇀𑆫𑆘𑆂 𑇅
𑆯𑇀𑆫𑆵𑆩𑆳𑆤𑆳𑆢𑇀𑆪𑆓𑆶𑆫𑆶𑆂 𑆯𑆶𑆁𑆨𑆂 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆑𑆟𑇀𑆜𑆂 𑆥𑆫𑆩𑆼𑆯𑇀𑆮𑆫𑆂 𑇆𑇔𑇆

"Hail the primordial Guru Shambhu, Srikantha the great lord who is full of radiance of spiritual light, whose greatness is beyond all evaluation, and who cuts asunder the bondage of the group of bound souls."

निजशिष्यविबोधाय प्रबुद्धस्मरणाय च ।
मयाभिनवगुप्तेन श्रमोयं क्रियते मनाक् ॥५॥

𑆤𑆴𑆘𑆯𑆴𑆰𑇀𑆪𑆮𑆴𑆧𑆾𑆣𑆳𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆶𑆢𑇀𑆣𑆱𑇀𑆩𑆫𑆟𑆳𑆪 𑆖 𑇅
𑆩𑆪𑆳𑆨𑆴𑆤𑆮𑆓𑆶𑆥𑇀𑆠𑆼𑆤 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆾𑆪𑆁 𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆠𑆼 𑆩𑆤𑆳𑆑𑇀 𑇆𑇕𑇆

"For the clear understanding of my pupil and for refreshing the memory of those who are already proficient in this Shastra, this philosophical discipline, I Abhinavgupt, am making a little exertion in writing this commentary."

कश्मीर के मंदिर - ज़ाला दीवी / [illegible]

Sanjay Kaul

ज्वाला या ज़ाला दीवी छि, कशीरी मंज़ सिरीनगरु प्यठ वुह किलोमीटर दूर पुलवामि ज़िलु किस ख्रुव ताहसीलस मंज अकिस बालु थंगिस प्यठ विराजमान। ज़ाला दीवी छि केंहन काशिर्यन बटन हुंज़ इष्टदीवी। अमि जायि हुंद वरनन छु राजतरंगिनी मंज़ं कल्हनन कोरमुत। कलहन छु लेखान अथ गामस छि वारियाह नाग तु पूर कुन अकिस बालु थांगिस छु अख कनि पल यथ अख यंत्रुच शकुल खनिथछि। अथ बालस तल छु अख नाग यथ बोड नाग, अनीक नाग, अनुनाग तु नागुबल ति छि वनान। मंदरस मंज़ं दरशनु ब्रोंहं छि बखुत्य अथ नागस मंज़ श्रान ज़रुर करान। अथ नागस अंद्य अंद्य आस्य वारियाह लोकुट्य बड्य मंदर यिम वोन्य खंडर छि गामुत्य। मंदरस तान्य छि त्रे हथ हेरुपाव्य बनाविथ। दीवी छि अथ मंदरस अंदर शिला रूपस मंज़ विदिमान, यि शिला छि ज़्चोर फुट थज़, ज़्चोर फुट ज़्यीठ तु त्रेफुट खजरस मंज़। येति छि बखत्यव दीवी हुदं दरशुन अकिस नारु रेह किस रुपस मंज़ कोरमुत। यि छु माननु यिवान ज़ि यि मंदर छु महशूर ज्वालजी तीरथुक प्रतिरुप युस हिमाचल प्रदेशस मंज़ छु। येति छु भारव बगवान सुंद अख लोकुट मंदर। अथ बालस खोहवुर कुन छु दोयिम बाल यथ विष्नु पाद छि वनान। अमिकिस थंगिस प्यठ छु द्वन पादन हुंद्य निशान यिम विष्णु सुंद्य माननु छि यिवान। अकि कालु आस्य राख्यस कुबेर दिवता सुंद सोरुय दन हय्थ ज़्चल्यमुत्य। तिमन छ़ांडान दिवता आयअपार्य किन्य तु कंरुख मातायि अस्तुति। तिमव कंर मातायि अथजायि रोज़नुच व्यंती । माता रुज़ अति ज़ाला रुपस मंज़। कंशीरी मंज़ं छि वख्तु वख्तु मंदरन ज़ख आमुत वातनावनु। अफगान कालस मंज़ कंर कुशिश ज़ि तिम करहान अथ शिलायि व्यतसतायि मंज़ विसरजन। अमि मंदरु प्यठु व्यथ छि दूर। तिम आस्य बठिस वातिथ थकान तु आसुख न्यंदुर प्यवान। हुशार गछ़िथ आसुख नु शिला मेलान केंह तु शिला आस वापस मंदरस मंज़ वातान। वुहिमि सदी मंजं छु यि मंदर राज़ु दया किशन कौल सुंदि अथव बनावनु आमुत । हालसुय मंज़ अकिस नारु हादिसस मंज़ गव अति वारियाह नो

[illegible]

contd.

कसान तु यि मंदरआव बेयि बनावनु। ज़ाला दीवी हुंद प्रादुर्बाव छु हारु ज़ूनु पछ च़ोदुच दोह बडु श्रदायि सान मनावनु यिवान। अमि दोह छु बोड हवन यिवान करनु। रातस छि बजन संध्या आसान। अमि दोह छि दूरि दूरि प्यठु काशिर बटु यिवान। तहर छि प्रसाद खातरु बनावनु यिवान। अमि मंदरुच मानता छि बटन तु मुसलमानन मंज़ हिशिय।

[illegible] 𑆑𑆱𑆳𑆤 𑆠𑆶 𑆪𑆴 𑆩𑆁𑆢𑆫𑆄𑆮 𑆧𑆼𑆪𑆴 𑆧𑆤𑆳𑆮𑆤𑆶𑇅 𑆘𑇊𑆳𑆬𑆳 𑆢𑆵𑆮𑆵 𑆲𑆶𑆁𑆢 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆢𑆶𑆫𑇀𑆧𑆳𑆮 𑆗𑆶 𑆲𑆳𑆫𑆶 𑆘𑇊𑆷𑆤𑆶 𑆥𑆗 𑆖𑇊𑆾𑆢𑆶𑆖 𑆢𑆾𑆲 𑆧𑆝𑆶 𑆯𑇀𑆫𑆢𑆳𑆪𑆴 𑆱𑆳𑆤 𑆩𑆤𑆳𑆮𑆤𑆶 𑆪𑆴𑆮𑆳𑆤𑇅 𑆃𑆩𑆴 𑆢𑆾𑆲 𑆗𑆶 𑆧𑆾𑆝 𑆲𑆮𑆤 𑆪𑆴𑆮𑆳𑆤 𑆑𑆫𑆤𑆶𑇅 𑆫𑆳𑆠𑆱 𑆗𑆴 𑆧𑆘𑆤 𑆱𑆁𑆣𑇀𑆪𑆳 𑆄𑆱𑆳𑆤𑇅 𑆃𑆩𑆴 𑆢𑆾𑆲 𑆗𑆴 𑆢𑆷𑆫𑆴 𑆢𑆷𑆫𑆴 𑆥𑇀𑆪𑆜𑆶 𑆑𑆳𑆯𑆴𑆫 𑆧𑆛𑆶 𑆪𑆴𑆮𑆳𑆤𑇅 𑆠𑆲𑆫 𑆗𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆳𑆢 𑆒𑆳𑆠𑆫𑆶 𑆧𑆤𑆳𑆮𑆤𑆶 𑆪𑆴𑆮𑆳𑆤𑇅 𑆃𑆩𑆴 𑆩𑆁𑆢𑆫𑆶𑆖 𑆩𑆳𑆤𑆠𑆳 𑆗𑆴 𑆧𑆛𑆤 𑆠𑆶 𑆩𑆶𑆱𑆬𑆩𑆳𑆤𑆤 𑆩𑆁𑆘𑇊 𑆲𑆴𑆯𑆴𑆪𑇅

Kashmiri Vowels in Devanagari & Sharada Scripts

A. Special vowels used in Kashmiri Devanagari & Sharada

ॳ	ॴ	ॵ	ॶ	ॷ	ऎ	ॲ	ऑ
◌ऺ	◌ऻ	◌ॏ	◌ॖ	◌ॗ	◌ॆ	◌ॅ	◌ॉ
𑆃𑇋	𑆄𑇋	𑆃𑆿	𑆃𑆶	𑆃𑆷	𑆍	𑆃𑆼	𑆄𑆼
◌𑇋	◌𑆳𑇋	◌𑆿	◌𑆶	◌𑆷	◌𑆼	◌𑆼	◌𑆳𑆼

Vowels with Guide words

अ	आ	ॳ	ॴ	ॶ	ॷ	ॵ	ओ	औ	अं
	◌ा	◌ऺ	◌ऻ	◌ॖ	◌ॗ	◌ॏ	◌ो	◌ौ	◌ं
अख	आराम	ॳछ	मऻज	बॖ	तॗर	दॏर	मोल	औशद	अंग
𑆃𑆒	𑆄𑆫𑆳𑆩	𑆃𑇋𑆗	𑆩𑆳𑇋𑆘	𑆧𑆶	𑆠𑆷𑆫	𑆢𑆿𑆫	𑆩𑆾𑆬	𑆐𑆯𑆢	𑆃𑆁𑆓

Vowels with Guide words Continued..

इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ऐ
ि◌	◌ी	◌ु	◌ू	◌े	◌ै	◌े
खिर	शीन	बुथ	जून	रेल	वैकुंठ	रेह
𑆒𑆴𑆫	𑆯𑆵𑆤	𑆧𑆶𑆡	𑆘𑆷𑆤	𑆫𑆼𑆬	𑆮𑆽𑆑𑆶𑆁𑆜	𑆫𑆼𑆲

शंकराचार्य का टीटवाल दौरा / ਸੰਕਰਾਚਾਰਯ ਕਾ ਟੀਟਵਾਲ ਦੌਰਾ

CST

- Sri Sri Vidushekara Bharathi Shankracharya of Sringeri performed Abhishek puja & Pran Pratishtha of Sharada murti at Sharada temple LoC Teetwal Kashmir. A large number of followers and locals took part in the function. After many decades a designated Shankaracharya has visited Kashmir and performed Abishek puja.
- Shankracharya ji arrived by a chopper at Tangdhar helipad and then travelled by car to Teetwal temple. Shankracharya was received by DC Kupwara, SSP and many other officials.
- On this occasion, Shankracharya ji lauded the role of administration, Save Sharda committee and locals in His Anugreh Bashnam. DC Kupwara announced an approved expenditure of 25 lacs by the authorities for construction of Ghat at Kishenganga nearby.

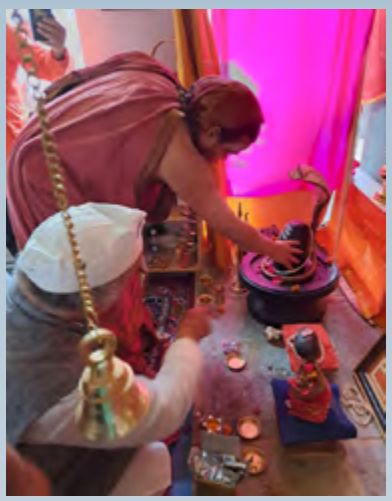

कश्मीरी कविता/ कश्मीरी कविता

Prathavi Nath Bhakti

रंगु पोशु मालु लागय नालिये लो
शारदा मांज आयु यज़्कालिये लो
कंद नाबद बादाम डालिये लो
शारदा मांज आयु यज़्कालिये लो
अस्य छि गामुत्य परछेन वोपरन मंज़
शारदा मांज करि सोन पानय संज़
तनु सु फेरान आस बालु बालिये लो
शारदा मांज आयु यज़्कालिये लो
आपुदावव निशु रछ थव खोशुहाल
दूर रूज़िथ असि मतु करतु पामाल
ज़ाल कठिनुक च़ठ कालु कालिये लो
शारदा मांज आयु यज़्कालिये लो
मेति रोज़तम हमेशु सुत्य सुती
बकती कुन च़ालि सितेजु कांती
लछ करोर छख छम चांन्य चालिये लो
शारदा मांज आयु यज़्कालिये लो

ਰੰਗੁ ਪੋਸੁ ਮਾਲੁ ਲਾਗਯ ਨਾਲਿਯੇ ਲੋ
ਸਾਰਦਾ ਮਾਂਜ ਆਯੁ ਯਜ਼੍ਕਾਲਿਯੇ ਲੋ
ਕੰਦ ਨਾਬਦ ਬਾਦਾਮ ਡਾਲਿਯੇ ਲੋ
ਸਾਰਦਾ ਮਾਂਜ ਆਯੁ ਯਜ਼੍ਕਾਲਿਯੇ ਲੋ
ਅੱਸ੍ਯ ਛਿ ਗਾਮੁਤ੍ਯ ਪਰਛੇਨ ਵੋਪਰਨ ਮੰਜ਼
ਸਾਰਦਾ ਮਾਂਜ ਕਰਿ ਸੋਨ ਪਾਨਯ ਸੰਜ਼
ਤਨੁ ਸੁ ਫੇਰਾਨ ਆਸ ਬਾਲੁ ਬਾਲਿਯੇ ਲੋ
ਸਾਰਦਾ ਮਾਂਜ ਆਯੁ ਯਜ਼੍ਕਾਲਿਯੇ ਲੋ
ਆਪੁਦਾਵਵ ਨਿਸ਼ੁ ਰਛ ਥਵ ਖੋਸ਼ੁਹਾਲ
ਦੂਰ ਰੂਜ਼ਿਥ ਅਸਿ ਮਤੁ ਕਰਤੁ ਪਾਮਾਲ
ਜ਼ਾਲ ਕਠਿਨੁਕ ਚ਼ਠ ਕਾਲੁ ਕਾਲਿਯੇ ਲੋ
ਸਾਰਦਾ ਮਾਂਜ ਆਯੁ ਯਜ਼੍ਕਾਲਿਯੇ ਲੋ
ਮੇਤਿ ਰੋਜ਼ਤਮ ਹਮੇਸ਼ੁ ਸੁਤ੍ਯ ਸੁਤੀ
ਬਕਤੀ ਕੁਨ ਚ਼ਾਲਿ ਸਿਤੇਜੁ ਕਾਂਤੀ
ਲਛ ਕਰੋਰ ਛਖ ਛਮ ਚਾਂਨ੍ਯ ਚਾਲਿਯੇ ਲੋ
ਸਾਰਦਾ ਮਾਂਜ ਆਯੁ ਯਜ਼੍ਕਾਲਿਯੇ ਲੋ

कोणार्क - सूर्य मंदिर / କୋଣାର୍କ - ସୂର୍ଯ୍ୟ ମନ୍ଦିର

D. K. Sud

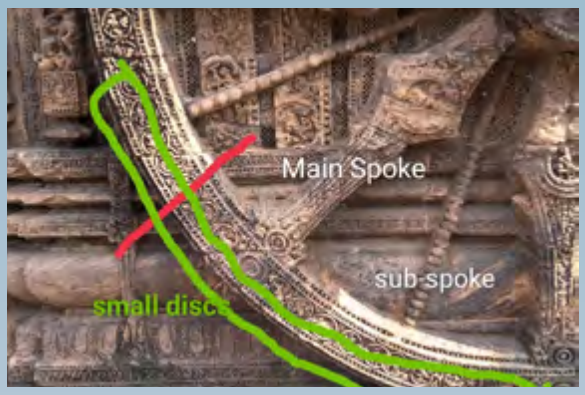

दिल्ली सल्तनत पर अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए राजा नरसिम्हदेव प्रथम द्वारा १२५० ईस्वी में निर्मित कोणार्क (सूर्य) मंदिर, विशिष्ट उड़ीसा वास्तुकार का एक प्रमुख उदाहरण है। एक रथ पर सूर्य देव का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्य को पूरा करने में बारह वर्ष और १२०० श्रमिकों का समय लगा। कोणराक संस्कृत के दो शब्दों कोण (कोण) + आर्क (सूर्य) से मिलकर बना है।

मंदिर का विषय आकाश के माध्यम से रथ पर सवार सूर्य देवता है। रथ को खींचने वाले सात घोड़े सप्ताह के सात दिनों का प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि २४ पहिए दिन के बारह घंटे और रात के बारह घंटे का प्रतिनिधित्व करते हैं।

कला के इस काम को जो असाधारण बनाता है वह यह है कि रथ के बारह जोड़े पहिये भी सूर्य-घड़ी के रूप में कार्य करते हैं। अधिकांश पहियों को अच्छी तरह से संरक्षित किया गया है जबकि सात घोड़ों में से केवल चार ही तत्वों द्वारा नष्ट किए गए हैं।

प्रत्येक पहिए में आठ मुख्य आरे हैं जो प्रत्येक तीन घंटे के आठ पहर का प्रतिनिधित्व करते हैं। आठ उप-तीक्के हैं: मुख्य और उप-तीक्ष्णता के बीच की दूरी डेढ़ घंटे का प्रतिनिधित्व करती है। इसके अलावा परिधि पर ४८० डिस्क हैं, प्रत्येक ३ मिनट का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे दिन के ४८०×३/६० = २४ घंटे बनते हैं।

रथ के पहिए एंटी-क्लॉक सन-डायल के रूप में कार्य करते हैं। पहिए के शीर्ष पर १२ बजे की पारंपरिक स्थिति आधी रात को चिन्हित करती है। लेकिन एक साधारण घड़ी की पारंपरिक ९ बजे की स्थिति पहिये पर सुबह के ६ बजे अंकित करती है। घड़ी को वामावर्त दिशा में पढ़ा जाता है; इसलिए नाम एंटी-क्लॉक।

समय कैसे पढ़ें: पहिये की परिधि पर पड़ने वाली एक्सल की छाया (लाल रेखा से चिह्नित) हमें समय बताती है। उपरोक्त उदाहरण में, छाया साढ़े ७ घंटे के निशान के पार है, जैसा कि प्रवक्ता द्वारा दर्शाया गया है। यह निकटतम स्पोक से आठ डिस्क नीचे है, इसलिए समय साढ़े सात घंटे के ७:३० प्लस ८×३ = २४ मिनट है जो सुबह ७:५४ है।

उगते सूरज की पहली किरणें गर्भगृह में प्रवेश करती हैं। मंदिर समुद्र के किनारे बनाया गया था। समुद्र अब लगभग २ से ३ किलोमीटर पीछे हट गया है। लगभग १२० साल पहले, एक चक्रवात के खतरे का सामना करते हुए, अंग्रेजों द्वारा इसके पतन से बचने के लिए गर्भगृह को बंद कर दिया गया था और ईंटों और मिट्टी से भर दिया गया था। कुछ अपुष्ट रिपोर्टें हैं जो कहती हैं कि एएसआई मिट्टी/ईंटों को हटाने और इसे एक बार फिर से जनता के लिए खोलने की योजना बना रहा है। एक उड़ती हुई मूर्ति के बारे में लोकप्रिय किंवदंती साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं है।

कलाकृति की बाहरी दीवारों पर रोजमर्रा की जिंदगी के आंकड़ों और घटनाओं को बारीकी से उकेरा गया है। चित्रण, कभी-कभी, एकमुश्त कामुक होते हैं।

मंदिर दो युद्ध हाथियों द्वारा संरक्षित है। किंवदंती है कि जब राजा नरसिंहदेव प्रथम युद्ध के मैदान में घायल हो गए थे, तो शाही हाथी सुदेही (ऊपर चित्र), राजा को अपनी सूंड में सुरक्षा के लिए ले गए थे।

कश्मीर शैव धर्म / कश्मीर शैव दर्शन

Jaidev

The article has an in depth analysis on the importance of the name Kashmir Shaivism for the Trika philosophy. The article has received wide appreciation from the scholars across globe. Many times this discussion has occurred in various forums where there is section which don't want to make it as Kashmir Shaivism. Very important point to note is that Swami Lakshmanji in a radio interview has himself explained in details on why this philosophy is called Kashmir Shaivism.

While eulogizing the land of Kashmir, the 10th century Kashmiri saint and polymath, Ācārya Abhinavagupta, went into bouts of ecstasy, describing Kashmir as the place 'where yogis and munis dwell in various spots, where Śiva himself dwells all the time'. He states emphatically that there is no other place in the world, such as Kashmir, for the fulfilment of all wishes and for the attainment of yogic accomplishments. He goes on to describe the beauty of Kashmir in his magnum opus, Tantraloka, describing the moon, the seasons, the various people, all the while diffusing them with divine imagery. He even defines Kashmir's glory through its societal settings, emphasizing the fact that Kashmir was that land 'were people normally are poetic and wise, where even the warriors are articulate, where women of cities are lustrous as the moon and charming in gait and where yoginis steeped in the spiritual achievements abound' [1]. It is clear from this fascinating description that Kashmir far from being an ordinary place, was the perfect setting for the evolution of the "darśana" (philosophical framework and its associated praxis) that we now call Kashmir Shaivism.

A debate rages behind the closed doors of academic institutions, in the private chats of peers and in some published works, on the coinage and the legacy of the term: Kashmir Shaivism. Many argue that that term is antiquated and irrelevant [2]. The reasons they state are centred around two themes, the first regarding the implication of using a geographical location to limit the larger scope of the darśana, and second regarding the usage of "Shaivism" to denote a specific type of sectarian philosophy. This article addresses both these themes and attempts to make a case for the use of Kashmir Shaivism as a justifiable term in reference to Trika Darśana or Paramādvaita darśana.

Origins of the term

The earliest known reference to this darśana as "Kashmir Shaivism" comes from J.C. Chatterji's book, by the same name, first published in 1914 [3]. The ease of the term combined with its inherent modernity, made the term quite appealing to the English-speaking academic audience of the time. They accepted it whole heartedly (we do not know if early debates existed) and before long, the term because ubiquitous. Papers, conferences, studies etc. all started to use "Kashmir Shaivism" to refer to Trika darśana and as an umbrella term referring to the sub-traditions of Kula, Krama, Spanda and Pratyabhijna schools [4]. That fact that Ācārya Abhinavagupta integrated all the sub-systems in his vision of the larger meta-framework of Anuttara Trika (where the Highest principle is described as "Parabhairava") helped scholars to think of it as a "Shaivite" system completely integrating the principle of "Śakti".

The Geographical Rooting of Shaiva Transmission and Exegesis

In a Hindi radio interview given by Swami Lakshmanjoo, the great scholar-saint of Kashmir, he answers a very directed question by the interviewer as to why "Kashmir" is used in reference to the Trika darśana. He goes on to explain the Guru Krama (the lineage of Masters), from Śrīkanthanātha onwards, who is believed to have manifested in Kailash Mountain in the Himalayas in the beginning of the Kali Yuga. The insiders of this tradition say that this lineage eventually shifted exclusively to Kashmir. Swamiji describes this migration as follows: 'Sangamāditya came from Kailash Parbat to Kashmir. His lineage continued in Kashmir. Also, Atrigupta came to Kashmir and was accommodated here during the time of Rāja Lalitāditya. His expertise was also brought into the religious landscape of Shaivism in Kashmir. Abhinavagupta was in his lineage as well' [5]. Swamiji reasons out that since all the key contributors of Kashmir Shaivism lived as Kashmiris in body and spirit, starting with Sangamāditya, it should be called Kashmir Shaivism [6]. The parallel transmission of the Śiva Sutras through Ācārya Vasugupta is also rooted in the land of Kashmir [7]. Unlike the case of any other darśana before or since, Kashmir

alone became the fertile land where the seeds of this darśana, gathering nourishing elements from the various existing systems across Bharat, reached its spiritual-philosophical culmination at the time of Ācārya Abhinavagupta. Thus, the story of Trika darśana is intimately linked to its lineage of siddhas and its geographical setting, Kashmir.
Rooting the darśana in Kashmir need not be a limitation as many argue. It doesn't mean that this system is practiced only in Kashmir and nowhere else in Bharat or the world. It simply implies that Kashmir Shaivism can be viewed as a darśana that was gifted to the whole world by Kashmir and its people, and now it belongs to humanity as a whole. Just as how the theories that come to be attached to individual's names (Newton's Theory of Motion, Pythagoras Theorem etc.), do not in any way mean that it applies to that person alone, Kashmir Shaivism is not specific to Kashmir alone, but belongs to all those who embrace it.

The Aesthetic-Experiential Influence of Kashmir on Trika Darśana

This article began with a reference to the glowing tributes of Ācārya Abhinavagupta to Kashmir, as both a divine land and a divine society. This is certainly no accident. In his monumental work "Abhinavabhārati", we see Ācārya's vision of the nature of aesthetic beauty being described, while secretly and subtly weaving in the larger framework of his spiritual insights. The opposite is the case with his magnum opus "Tantraloka" where he attempts to capture the subtle element of "rasa" (aesthetic-pleasure) in his verses, while dealing with terse matters of ritual and philosophy [1]. One could ask if this could possibly be done in, say a harsh desert landscape or the deserted mountain caves in the upper Himalayas? The answer is most certainly' No.' The land and its people, play a significant role in the way the thought process of a civilization unfolds. The aesthetic beauty of the stunning Kashmir valley with its forests, its clear water bodies, set against the backdrop of the mesmerising blue mountains, illumined by the snow, shining in the clear morning sun; if poets and saints could ever be created, it could only be in such an enthralling space. Ācārya Utpaladeva, the great Pratyabhijna philosopher-poet is said to have gone into divine trances in the midst of the Dal Lake, singing verses in praise of his beloved Śiva. These were later compiled by his disciples and came to be known as Śiva Stotrāvali [8]. Here too we see the aesthetic-experiential influence of the landscape of Kashmir in the development of the darśana.

The Kashmir Exodus and Its Hefty price

During the early months of 1990, the last phase of the Kashmir exodus began in response to the Islamic genocidal forces taking charge in Kashmir. The Kashmiri families leaving their home and hearth, packed what is most important to them in the dead of the night, and onboarded any means of transport they could find to flee before day-break. One would expect an ordinary man to perhaps carry his clothes and valuables when he decides to leave his home for good in the midst of a life-threatening scare. However, the gentle yet sterling character of the Hindus of Kashmir, inspired them to travel with something even more valuable to them - Knowledge. Books, Puja manuals, old manuscripts handed over to them from earlier generations, made it out of Kashmir, safe in the hands of Kashmiris who prized them more than their own life. While most of the published texts are available in the KSTS series (Kashmir Series of Texts and Studies), many new manuscripts have come to light over time, thanks to the incredible bravery of the Kashmiri Pandits. These manuscripts are now available in portals like eGangotri [9]. The coinage and usage of Kashmir Shaivism as a term is also a glowing tribute to this brave community, one that the rest of Bharat owes them.

Academic Sleight of Hand

In his book Tantra Illuminated, Dr Christopher Wallis, makes some interesting comments about Hinduism. He states that it is a misunderstanding to consider Shaivism and Tantra to be part of "Hindu"ism, which is a colonial construct. He argues that prior to the colonial era, no clear reference of a common unified religion known as Hinduism exists, but what was there instead were a set of mutually distinct religious traditions like Brāhmanism (a.k.a. Vedism), Śaivism, Śāktism, Vaishnavism, Buddhism, and Jainism. He also argues that Hinduism as a religious framework tends to blur the separation of these various traditions but integrating it within a larger framework of Vedic Brāhmanism. [10]
In short, Dr Wallis argues that Shaivism and specifically Trika Shaivism (which he refers to with its technical name as Śaiva Śakta Tantra) is falsely clubbed under the framework of Hinduism. He is not alone in promoting this rhetoric of dismissing the existence of an ancient meta-system (one may call it Sanatana Dharma) that existed long before

the word "Hindu" even came to be. This meta-system accommodated within it the various varieties of Indic religions as darśanas, with an attitude of "samanvayata" ie. celebrating diversity firmly rooted in a foundational unity based on a Civilizational consciousness [11]. Therefore, any attempt to separate out Kashmir Shaivism or Śaiva Śakta Tantra from the larger body of Sanatana Dharma is a misguided effort and cannot be accurate in its assessment. The coinage of the term Kashmir Shaivism, being rooted in Kashmir, helps to resist these misguided attempts but emphasizing that Trika darśana is very much Hindu in its identity and being.

Śaivism, Śaktism or No-ism

The "Shaiva" part of Kashmir Shaivism is often argued to be a sectarian term. Some scholars argue that Trika is neither Shaiva nor Shakta exclusively. While this is true, the "Shaivism" part of the term does not imply an exclusion of Śakti as is suggested in their arguments. What can technically be called the "Śaiva Mantra Marga" forms the foundational basis for clarifying how Kashmir Shaivism is an act of Śaiva-Śākta integration [12]. Here we see the broadening of the definition of Shaivism, as a darśana, concerning that "Śiva", who is Universal Consciousness (Chaitanya) [13], which is well beyond the confines of any name, form and its corresponding puranic implications. The Śiva Mantra Marga integrates within the ideal of Supreme Consciousness, known within the tradition as Bhairava, the form and essence of Śakti (as Power) thus enabling the various seers of the lineage to use the terms Śiva and Śakti in context, while qualifying it with the fact that there is no difference between Śakti and Śaktimān (Śiva) [14]. Therefore, when the term Śiva or Shaiva is used, Śakti is implied and vice versa. This distinguishes Kashmir Shaivism from other exclusive Shaivite systems like Śaiva Siddhanta and Śākta systems like Śri Vidya, where either the Śiva or Śakti tattvas are considered higher than the other. Since a student of Kashmir Shaivism is taught the eternal union or sameness of the Śiva and Śakti aspects, no real harm is done in calling it "Shaivism". Moreover, within the Śastric tradition itself, Ācārya Somananda in his work "Śivadristi" argues that it would be proper to call the "person" (consciousness as the first person) using only the term "Śiva" according to rules of Sanskrit grammar. Even then it must be emphasized that Śiva's Śakti is absolutely one with Him and that if Śakti as a term is used in reference to the same entity, it would be accurate [15].

In summary, the term Kashmir Shaivism, despite the resistance of many, can still hold relevance today as perhaps one of several terms referring to the same darśana. It is true that Trika darśana was not restricted to Kashmir alone nor did it develop in isolation from other parts of Bharat and other darśanas. However, as argued in the article, both in terms of its rootedness in the geography of Kashmir as well as the uniqueness as a system of Shaiva thought and praxis, we are justified in continuing to use this term now and in the future.

References:

[1] Verses 40-46, Tantraloka Ch 37, Abhinavgupt's Sri-Tantraloka and other works, First Time English Translation with Sanskrit Texts, Volume 8 by Prof. Satya Prakash Singh & Swami Maheswarananda
https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.344996

[2] Page 333-335, Tantra Illuminated by Christopher D. Wallis.

[3] Kashmir Shaivism, Jagdish Chandra Chatterji, https://archive.org/details/kashmirshaivismjagadishchandrachatterjikss_202003_692_i/mode/2up

[4] Page 129, Kashmir Shaivism-The Secret Supreme, Swami Lakshmanjoo
https://archive.org/details/kashmirshaivismthesecretsupremeofswamilakshmanjooed.johnhughes_202003_597_o

[5] https://archive.org/details/swami-lakshman-joo-hindi-interview-track-1_81_g

[6] Page 112, Kashmir Shaivism-The Secret Supreme, Swami Lakshmanjoo
https://archive.org/details/kashmirshaivismthesecretsupremeofswamilakshmanjooed.johnhughes_202003_597_o

[7] Page 9-10, Śiva Sutras- The Supreme Awakening, Swami Lakshmanjoo
https://archive.org/details/SwamiLakshmanjooŚivaSutrasTheSupremeAwakening354pAnomolous/page/n37/mode/1up

[8] "The captivating verses that comprise our newest publication, Festival of Devotion & Praise were born on Kashmir Valley's picturesque Dal Lake as an inspirational outpouring of devotion from the heart of the medieval Kashmiri spiritual master and mystic Utpaladeva."
https://www.lakshmanjooacademy.org/kashmir-shaivism/teachings/Śivastotravali/

[9] https://archive.org/search?query=sharada%20eGangotri

[10] Page no 39-41, Tantra Illuminated by Christopher D. Wallis.

[11] https://swarajyamag.com/magazine/a-space-for-differences-samanvaya , article by Aravindan Neelakandan

[12] https://en.wikipedia.org/wiki/Mantra_marga

[13] Sutra 1.1, Śiva Sutras- The Supreme Awakening, Swami Lakshmanjoo
https://archive.org/details/SwamiLakshmanjooŚivaSutrasTheSupremeAwakening354pAnomolous/page/n37/mode/1up

[14] Verse 68, Tantraloka Ahnika 1, (Light on Tantra in Kashmir Shaivism, Swami Lakshmanjoo) https://www.lakshmanjooacademy.org/the-aspects-of-lord-Śiva-svatantrya-Śakti-in-kashmir-shaivism/

[15] Page 212-214, The Ubiquitous Siva, John Nemec

CST - The Way Forward

Rakesh Kaul

We have drawn up an aggressive plan for the coming year for ourselves, to further our aim and objective of "Preserve, Protect and Propagate" Sharada Script.

- We have developed lot of teachers, but still feel the need to develop more and shall work on it.
- We have successfully completed an advanced Sharada course using Whatsapp Group methodology. Continue to conduct Advanced learning sessions, this year.
- We wish to have advanced Sharada Online tutorials this year.
- To enable easy access of Satisar Sharada Font we wish to pursue recognition of the same by online applications like Google etc.
- Last year we have announced Scholarships for students pursuing research on Sharada script and associated topics. We shall pursue it and make a regular yearly exercise.
- We published a primer for Kashmiri writing in Sharada last year. We wish to pursue introduction of the same Primary schools with the competent authorities. This will help our efforts at protecting Sharada Lipi for writing Kashmiri.
- We shall continue to work with the Ministry of Education, Govt. of India for popularizing Sharada Lipi at National level and shall extend all our help for doing the same.
- We have started an ambitious OCR "Optical Character Recognition" project in the current year and wish to complete the same this year.

शारदा लिपि के विकास की मुख्य विशेषताएं - ३

शारदा लिपि के विकास की मुख्य विशेषताएं - ३

Vinutha Saligram

देवी-री-कोठी शारदा शिलालेख, चंबा, हिमाचल प्रदेश।

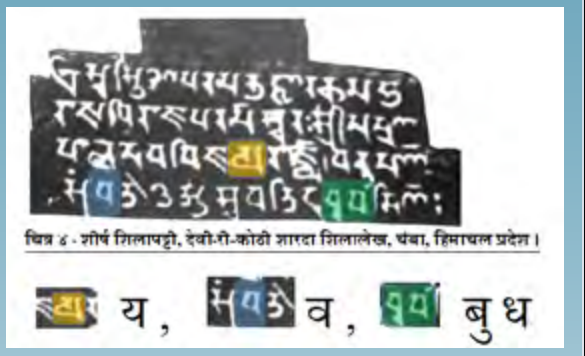

चित्र ४ - शीर्ष शिलापट्टी, देवी-री-कोठी शारदा शिलालेख, चंबा, हिमाचल प्रदेश।

पिछली कड़ियों में हमने पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के ज्ञान और संस्कृति में एक कड़ी के रूप में शारदा लिपि की महत्वपूर्ण भूमिका को समझा। आइए हम देवी-री-कोठी (चंबा, हिमाचल प्रदेश), १२वीं शताब्दी के फव्वारा शिलालेख पर चर्चा जारी रखें, जो भूरी सिंह संग्रहालय (चंबा, हिमाचल प्रदेश) में संरक्षित है, जिसमें डॉ.जे.पी. वोगलजी ने मध्यकालीन इतिहास और शारदा लिपि के विकास पर का कार्य किया।

(चित्र ४ - Ref :https://archive.org/details/saradaandtakarialphabetsoriginanddevelopmentb.k.kauldeambi/page/n173/mode/2up)

चित्र के शीर्ष शिलापट्टी पर राणापाल के शिलालेख में अक्षर 'य' शामिल है, जो वर्तमान उपयोग से भिन्न हैं। डॉ. देंबी जी के अनुसार, ९वीं से १२वीं शताब्दी के दौरान, शारदा अक्षर 'य' में बायीं ओर अधिक उभार था और कभी-कभी खुले शीर्ष के साथ दाएं ओर के ऊर्ध्वाधर के नीचे की ओर लम्बाई होती थी।

अक्षर 'व' का शीर्ष सपाट है और यह कोणीय और घुमावदार दोनों आकार का है। इस शिलालेख में 'ब' को दर्शाने के लिए भी इस चिन्ह का प्रयोग किया गया है। साथ ही 'ध' अक्षर भी 'व' जैसा दिखता है।

प्रो॰ वेद कुमारी घई / 𑆥𑇀𑆫𑆾𑇅 𑆮𑆼𑆢 𑆑𑆶𑆩𑆳𑆫𑆵 𑆒𑆂

Vinutha Saligram

A pioneer in the field of Sanskrit literature, Prof & Dr Ved Kumari Ghai was a prolific scholar who authored several books on Sanskrit literature. Was was born in Jammu City on 16th December 1931 to Shri B.K.Ghai and Smt Vidyawati Ghai. She did her MA and PhD in Sanskrit. Studied at Punjab and Banaras Hindu Universities. She was a professor of Sanskrit at Government College for Women, Parade, Jammu and later served as a head of post graduate level Sanskrit Department, Jammu University till her superannuation in 1991.

She taught Panini's Sanskrit grammar and literature at the Institute of Indian Studies, Copenhagen University, Denmark for three years. She was associated with several literary and social organizations. Was a member of the Amarnath Shrine board.

Prof. Ved Kumari Ghai ji worked towards researching and promoting Indian ancient literature. She was well versed in many languages and scripts. A glimpse of her significant collection of writings is given below.

Her work on Sanskrit text, 'Nilamata Purana', involved research in several manuscripts and publications available in Sharada and Devanagari scripts.

Prof. Ved Kumari Ghai ji 's expertise in Sharada script is well documented. In her work on Nilamata Purana, she worked on three Sharada manuscripts among eight previously not referred manuscripts. In one of the Sharada manuscripts, it was mentioned as "का" and "म" in the left margin denoting "काश्मीर महात्म्यम्" which is believed to be another name of Nilamata Purana. She provided a significant insight in understanding the history and locations of Kashmir through her extensive research and explanation in English of this work.

Suryashatakam , is another Sharada manuscript based work of Prof. Ghai ji. This work is a translation with commentary of a beautiful poetry on Surya Bhagwan by the prominent scholar Rajanaka Ratnakantha. Prof Ghai Ji has given in depth analysis of the worship of Surya Bhagwan and the poetic nuances of the original Suryashatakam.

Her book, 'Studies In Phonetics And Phonology (With special reference to Dogri)', is an important work in linguistics. She had co-authored, Ballatashataka (With Maheshvara Sanskrit Tika), with her husband, an eminent Sanskrit scholar Dr. Ram Pratap ji.

In her book,' Kashmir ka Sanskrit Sahitya ko Yogdan ', Prof. Ghai ji discusses in detail Kashmir's role in Sanskrit Literature.

" कश्मीर की धरती प्राचीनकाल से संस्कृतभाषा और संस्कृतसाहित्य की प्रमुख क्रीडास्थली रही है। काव्य , काव्यशास्त्र , दर्शन , व्याकरण , आयुर्वेद , इतिहास आदि अनेक क्षेत्रों में कश्मीर के संस्कृतलेखकों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। "

In this book she has analysed extensively the Sanskrit literature scenario of Kashmir - Kashmir's Sanskrit poets who were born and flourished on the fertile soil of Kashmir like Bhallat, Shivswami, Kalhan, Bilhan, Shambhu, Mankh, Ratnakar, Jonraj, Shrivar etc. who, enriched Sanskrit literature. Kashmir also has its own identity in the fields of grammar and philosophy. The texts of Chandra Vyakaran and Katantra Vyakaran were composed in Kashmir. Famous commentary Kashika on Panini Ashtadhyayi and Patanjali's Mahabhashya were also written in this land. Kashmir Shaivism, also known as Pratyabhijna Darshan and Trika Darshan, is an important form of Shaivism. Acharya Charak's Sanskrit work on Ayurveda, composed in Kashmir is an invaluable asset of India, which is studied and taught in every corner of the country. The study of Indian poetics cannot be imagined without Dhwanyaloka, Abhinav Bharati and Kavyaprakasha. Rajtarangini has an important place in the discussion of historical poems, which present the systematic history of this region. A large part of the Sanskrit

literature composed in Kashmir has become extinct. Of the thirty-eight compositions of Kshemendra, only eighteen are available. Poets like Muktakan, Chakrapal, Kalash etc. have been mentioned by him. Many poets like Alankar, Nandan, Shrigarbha, Nagdhar, Padmraj, Jinduk, Damodar etc. were present in the literary seminar described by Mankh. But their compositions are not available. In Subhashit Sangrahas, there are scattered verses of many poets like Amrit Datta, Ralhan, Matri Gupt, Ranaditya, Muktapida etc. The works of some authors like Ratnakanth, Gopal, Anand etc. are available in the form of manuscripts and are awaiting editing and publication. She has discussed literature of Kashmir in different chapters devoted to Purana Sahitya, Natya Sahitya, Maha Kavya, Manjari Kavya, Aitihasika Kavya, Loka Katha, Muktaka Kavya, Laghu Kavya, Stuti Kavya. Kavya Shastra. The chapters have details like lineage of Kings, important dates of poets and their works, commentaries, poetics, verses and quotations. Thus, Prof Ghai ji, has given a comprehensive picture of Kashmir's Sanskrit literature. This is an important and useful study material for researchers and enthusiasts on Sanskrit literature.

"It may be said that if the Rajatarangini is important for the political history of ancient Kashmir, the Nilamata is as important for the cultural history of that part of the country" Prof Ved Kumari Ghai ji.

Prof. Ved Kumari Ghai ji was a recepient of many awards and accolades.

She was awarded the Padma Shri Award - 2014, Certificate of Honour by President of India for her scholarship in Sanskrit, Gold Medal on Republic Day- 1995 by J&K Government for her social work for women and children, President's Award for Sanskrit -1997, Dogra Ratan - 2005, life time achievement award - 2009 and Stri Shakti Puraskara - 2010.

Her achievements and immense popularity is evident in the form of a Felicitation Volume in her honour. Vedagauravam-Ved Kumari Ghai Abhinandan Granth, by the Post-Graduate Department of Sanskrit, University of Jammu - 2009.

She passed away on 30th May 2023.She will be remembered as one of the very important scholars of modern times. Her legacy will be an inspiration for all in preserving and promoting Bharathiya Jnana Parampara.

References:

1.Wikipedia.org

2."Sanskrit is soul of India's heritage". Daily Excelsior. 2012 , 2023.

3. Books by Dr. Vedkumari ji (archives.org)

Vedagauravam-Ved Kumari Ghai Abhinandan Granth , Jammu University

The Nilmata Purana (Vol 1 and Vol ll), J and K academy of Arts, Culture and Languages -Srinagar, Jammu.

सूर्यशतकम् (महाकवि राजानक रत्नकण्ठ विरचितम्) -हिन्दी भाषानुवाद टिप्पणी सहित - ऋचा प्रकाशनम ,जम्मु तवि

Studies In Phonetics And Phonology (With special reference to Dogri), ARIANA PUBLISHING HOUSE, NEW DELHI.

Ballatashataka (With Maheshvara Sanskrit Tika), Meharchand Lachhmandas Publications, New Delhi

काश्मीर का संस्कृत साहित्य को योगदान - जे॰ एण्ड के॰ अकादमी अफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, जम्मू

वर्णमाला /
अ अनार
आ आम
इ इमली
ई ईख
उ उल्लू
ऊ ऊन
ऋ ऋषि
ए एकतारा
ऐ ऐनक
ओ ओखली
औ औषध
अं अंगूर
अः
क कबूतर
ख खरगोश
ग गमला
घ घड़ी
ङ
च चरखा
छ छाता
ज जूता
झ झंडा
ञ
ट टमाटर
ठ ठठेरा
ड डमरू
ढ ढोलकी
ण
त तरबूज़
थ थैला
द दूध
ध धनुष
न नारियल
प पतंग
फ फल
ब बकरी
भ भालू
म मछली
य यज्ञोपवीत
र रस्सी
ल लट्टू
व वाहन
श शलगम
ष षटकोण
स सेब
ह हिरण
क्ष क्षत्रिय
त्र त्रिशूल
ज्ञ ज्ञानी
0 ० 1 १ 2 २ 3 ३ 4 ४ 5 ५ 6 ६ 7 ७ 8 ८ 9 ९
CORE SHARADA TEAM FOUNDATION

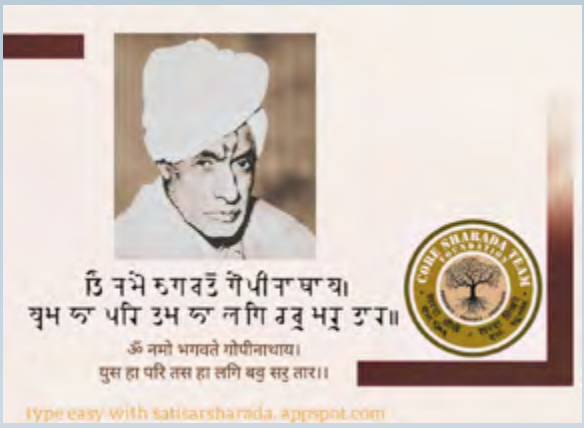

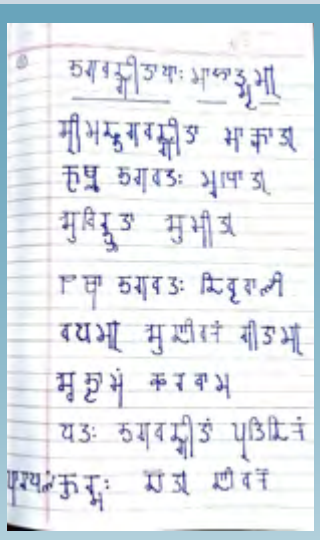

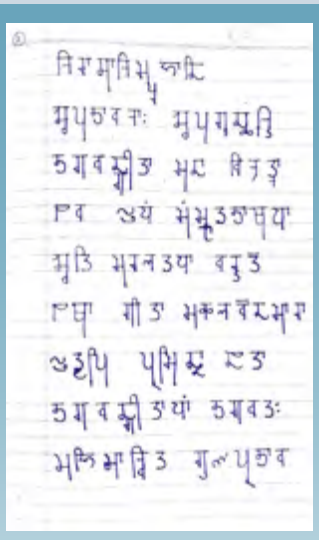

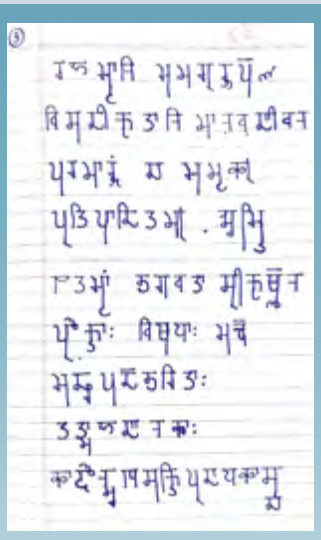

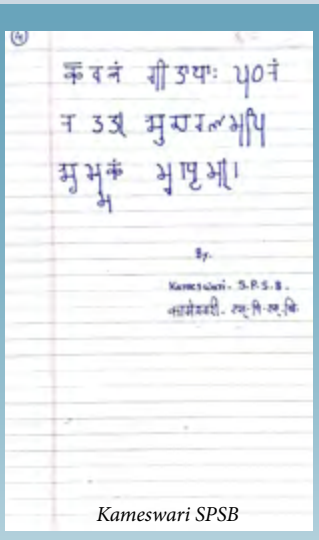

भगवद्गीतायाः महात्म्यम्।

श्रीमद्भगवद्गीता साक्षात् कृष्ण भगवतः मुखात् आविर्भूता आसीत्। एषा भगवतः दिव्यवाणी। वयम् आजीवनं गीताम् अभ्यासं करवाम। यतः भगवद्गीतां प्रतिदिनं पारायणं कुर्मः चेत् जीवने निराशानिस्पृहादि अपभावनाः अपगच्छन्ति। भगवद्गीता सदा विनूत्ना एव। इयं संस्कृतभाषया अति सरलतया वर्तते।एषा गीता सकलवेदसारा इत्यपि प्रसिद्धा जाता। भगवद्गीतायां भगवतः महिमान्वित गुणप्रभाव रहस्यानि समग्ररूपेण विशदीकृतानि। मानवजीवनपरमार्थं च सम्यक् प्रतिपादितम् अस्ति। एतस्यां भगवता श्रीकृष्णेन प्रोक्ताः विषयाः सर्वे सदुपदेशभरिताः उत्साहजनकाः कार्योन्मुखशक्तिप्रदायकाश्च। केवलं गीतायाः पठनं न तत्र आचरणमपि अस्माकं मुख्यम्। अतः सर्वे प्रतिदिनं भगवद्गीताम् अवश्यं पारायणं कुर्याम।

वन्दे गीतामातरम्।

Highlights of Last Month

- Advanced Sharada Lipi course concluded in July.
- New basic Sharada Lipi Course will start in August.
- CST welcomed and interacted with the eminent Kashmir Shaiva scholar Prof Sthaneshwar Timalsina during a recent event held at Bengaluru.

Our publications :-

FOR PLACING YOUR ADS IN MAATRIKA CONTACT FOR DETAILS

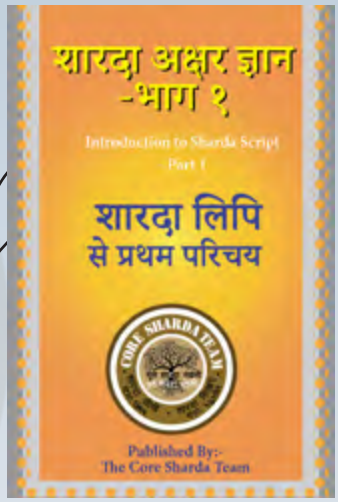

Price Rs 100/-

BUY NOW

Price Rs 100/-

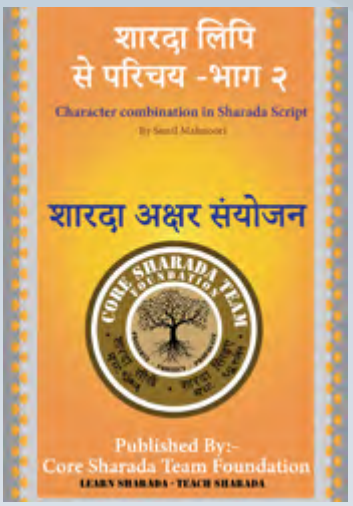

Price Rs 175/-

BUY NOW

For Learning Sharada or any other suggestions:-

facebook.com/Core-Sharda-Team-110148770831539
instagram.com/coreshardateam
shardalipi.com
twitter.com/CoreSharada
maatrika.cst@gmail.com
Phone - 98301 35616 / 90089 52222

DONATE

If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.

Core Sharada Team Foundation
HDFC Bank, Airport Rd., Bangalure
Account No: 5020 0054 8093 36
IFSC : HDFC0000075
(RTGS / NEFT)

(Income Tax exemption under 80G)
Approval number- AAJCC1659DF20206 12-Clause (iv) of first provison to sub-section (5) of section 80G

© The contents of Maatrika are copyright of The Core Sharada Team Foundation.
Any redistribution or reproduction in part or all of the contents in any form is not allowed without permission.